Courier Correo Courrier

April 2015
Volume 30, Number 2

Mennonite World Conference
A Community of Anabaptist related Churches

Congreso Mundial Menonita
Una Comunidad de Iglesias Anabautistas

Conférence Mennonite Mondiale
Une Communauté d'Eglises Anabaptistes

3
प्रेरणा और मनन
एक वैश्विक ग्राम अनिवार्य है

6
दृष्टिकोण
विश्वव्यापी सह–भागिता और इसका महत्व

10
देश
संयुक्त राज्य अमरीका

14
पेन्नसिलवेनिया 2015 न्यूज़ 6

सन्निविष्ट
कूरियर न्यूज़

मुखपृष्ठ पर चित्र:
ओपन डोर मेनोनाइट चर्च, जैकसन, मिसीसिप्पी, यूएसए के सदस्य बड़े प्रेम के साथ गले मिलकर एक दूसरे का अभिवादन कर रहे हैं। मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस की सदस्य कलीसिया, मेनोनाइट चर्च यूएसए उन अनेक डिनोमिनेशनों में से एक हैं जो मिलकर अमरीका में ऐनाबैपटिस्ट समुदाय का रूप लेते हैं। मेनोनाइट चर्च यूएसए और अमरीका के अन्य ऐनाबैपटिस्ट लोगों के बारे में जानने के लिए, पृष्ठ 12 से आरम्भ होने वाले अमरीका देश पर लिखे लेख को पढ़ें। फोटो: विडा स्निडर द्वारा और मेनोनाइट यूएसए की अनुमति से प्रकाशित।

सुधार:

फरवरी 2015 के अंक कोरियर न्यूज़ (पृष्ठ 3), एडी वालुज़ो के उद्धरण के साथ गलती से पॉउलोस विडजाजा की फोटो दे दी गई थी। सही फोटो यहाँ दी जा रही हैं।

***Courier* स्टाफ इस त्रुटि के लिए क्षमाप्रार्थी है।**

Courier Correo Courrier

Volume 30, Number 2

Courier/Correo/Courrier मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस का एक प्रकाशन है, यह वर्ष में छह बार चार पृष्ठ की समाचार पत्रिका के रूप में *"News/Noticias/ Nouvelles"* शीर्षक से प्रकाशित की जाती है – जिसमें सामयिक समाचार और बड़ी खबरें शामिल की जाती है। वर्ष में दो बार, यह समाचार पत्रिका सोलह पृष्ठ की एक पत्रिका का रूप ले लेती है, जिसमें प्रेरणादायक सन्देश, अध्ययन, शिक्षात्मक और सचित्र लेखों को शामिल किया जाता है। हर संस्करण अंग्रेजी, स्पेनिश, और फ्रेंच भाषाओं में प्रकाशित किया जाता है।

सीज़र गार्सिया प्रकाशक
रोन रेम्पल प्रमुख सम्प्रेषण अधिकारी
डेविन मानज़ुल्लो थॉमस सम्पादक
ग्लेन फ्रेट्ज़ डिज़ाइनर
सिलवि गुडिन फ्रेंच अनुवादक
मार्सिया और यूनीके मिलर स्पेनिश अनुवादक

Courier/Correo/Courrier निवेदन पर उपलब्ध है।
सभी पत्र इस पते पर भेजें:
MWC, Calle 28A No. 16-41 Piso 2, Bogota, Colombia

Email: info@mwc-cmm.org
www.mwc-cmm.org

Courier/Correo/Courrier (ISSN 1041-4436) is published six times a year. Twice a year, the newsletter is inserted into 16-page magazine. Mennonite World Conference, Calle 28A No. 16-41 Piso2, Bogota. Colombia
Publication Office: Courier, 451B Pleasant Valley Road, Harrisonburg VA 22801 USA, Periodical postage paid at Harrisonburg VA, Printed in USA.
POSTMASTER: Send Address Changes to Courier, 451B Pleasant Valley Road, Harrisonburg VA 22801 USA.

सम्पादक की कलम से

''इसी प्रकार तुम सब मिलकर मसीह की देह हो, और अलग अलग उसके अंग हो। और परमेश्वर ने कलीसिया में अलग अलग व्यक्ति नियुक्त किए हैं, प्रथम प्रेरित, दूसरे भविष्यद्वक्ता, तीसरे शिक्षक, फिर सामर्थ के काम करने वाले, फिर चंगा करने वाले और उपकार करने वाले, और प्रधान और नाना प्रकार की भाषा बोलने वाले। क्या सब प्रेरित हैं? क्या सब भविष्यद्वक्ता हैं? क्या सब उपदेशक हैं? क्या सब सामर्थ के काम करने वाले हैं? क्या सब को चंगा करने का वरदान मिला है? क्या सब नाना प्रकार की भाषा बोलते हैं? क्या सब अनुवाद करते हैं? तुम बड़ी से बड़ी वरदानों के धुन में रहो! परन्तु मैं तुम्हें और भी सब से उत्तम मार्ग बताता हूँ।'' (1 कुरिन्थियों 12:27–31)

जब *Courier/Correo/Courrier* का यह अंक आपके में हाथों में होगा, तब अगले मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस सम्मेलन, पेन्नसिलवेनिया 2015 के आरम्भ होने में तीन महिने से भी कम का समय शेष रहेगा। सम्मेलन की मेजबानी करने वाले शहर – हेरिसबर्ग, पेन्नसिलवेनिया – का स्थानीय निवासी होने की हैसियत से – मैं उत्सुकतापूर्वक संसार भर से मेरे भाई–बहनों के मेरे आँगन में आगमन की बाट जोह रहा हूँ! संसार भर से आए मसीह के अनुयायियों के साथ संगति करना क्या ही आनन्द और सौभाग्य की बात है!

जबकि पेन्नसिलेवनिया 2015 की तैयारी जारी हैं, *Courier/Correo/Courrier* का यह अंक हमें एक महत्वपूर्ण प्रश्न पर मनन करने का अवसर दे रहा है: हमें एक विश्वव्यापी/वैश्विक कलीसिया की आवश्यकता क्यों है? यह एमडबल्यूसी की सेवकाई से सम्बन्धित एक बुनियादी प्रश्न है। और यह एक ऐसा प्रश्न है जिसकी प्रासंगिकता विशेष अवसरों (जैसे सम्मेलन) तक ही सीमित नहीं है जब विश्वव्यापी कलीसिया एक स्थान पर एकत्रित होती है। हमें यह भी जानने की आवश्यकता है कि हमें एक विश्वव्यापी कलीसिया की आवश्यकता क्यों है जब हम सारे संसार में फैले हुए हैं, और अपने अपने देशों की सीमाओं, कलीसिया समुदायों और क्षेत्रीय कॉन्फ्रेंसों के द्वारा अलग किए गए हैं।

इस अंक में ''प्रेरणा और मनन'' और ''दृष्टिकोण'' दोनों ही खण्डों में ''हमें एक वैश्विक कलीसिया की आवश्यकता क्यों है'' विषय पर ध्यान केन्द्रित किया गया है। एमडबल्यूसी की मुख्य विकास अधिकारी, एरलि क्लासन ने अपने लेख, ''वैश्विक ग्राम अनिवार्य है'' में यह तर्क दिया है कि वैश्विक कलीसिया इसलिए आवश्यक है क्योंकि यह हमें एक ऐसा अवसर और मंच प्रदान करती है जिसमें अपनी विभिन्नताओं के बारे में एक दूसरे को बताने के द्वारा हम अधिक मजबूत होते हैं और यीशु मसीह के बेहतर अनुयायी बनते हैं। दृष्टिकोण के खण्ड में, बिल्कुल अलग अलग सांस्कृतिक, राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक पृष्ठभूमियों – कनाडा, केन्या, जर्मनी, और भारत – के ऐनाबैपटिस्ट अगुवों ने अपने स्थानीय अनुभवों के आधार पर एक उत्तर दिया है। एक साथ मिलकर, इन लेखों के द्वारा हमारे लिए सम्मेलन की ओर ध्यान केन्द्रित करने के लिए सहायक मनन प्रस्तुत किया गया है।

सम्मेलन की आगे की तैयारी में सहायता करने के लिए, इस अंक में पेन्नसिलवेनिया 2015 न्यूज़ का एक नया अंक जोड़ा गया है, जिसमें इस विश्व स्तरीय सम्मेलन के बारे में कुछ ताज़ा जानकारियाँ दी गई हैं, साथ ही संयुक्त राज्य अमरीका देश का परिचय दिया गया है, जो इस वर्ष 25 वर्षों में पहली बार इस सम्मेलन की मेजबानी कर रहा है।

मैं इस आने वाले सम्मेलन के विषय में अपनी उत्सुकता को सम्भाल नहीं पा रहा हूँ! जबकि मैं आशान्वित हो कर राह देख रहा हूँ कि मैं संसार भर के अपने भाई बहनों के साथ मेरे जीवन में एक ही बार आने वाले इस अवसर पर एकत्रित हो सकूं, मैं लगातार अपने आप को पौलुस प्रेरित के इन वचनों को स्मरण दिलाता हूँ, जिसने कहा कि हमें ''और भी सबसे उत्तम मार्ग'' दिखाया जाएगा (1 कुरिन्थियों 12:31)। परमेश्वर से मेरी यह प्रार्थना है कि यह एमडबल्यूसी एक ऐसी देह बने जिसमें हो कर हम सब उस सबसे उत्तम मार्ग को जान सकें।

डेविन मानज़ुलो–थॉमस मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस के लिए सम्पादक के रूप में अपनी सेवाएं देते हैं।

एक वैश्विक ग्राम अनिवार्य है

ताकि हम ऐसे लोग बन सके जैसा परमेश्वर हमें बनाना चाहता है

अलग अलग देशों की तीन मेनोनाइट महिलाएं इथोपिया मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस के सम्मेलन के दौरान एक दूसरे से सीखती हुईं। फोटो: मर्ले गुड

अर्लि क्लासन

यदि आप से कोई कहे कि थोड़े शब्दों में अपना परिचय दें, तो आप किस प्रकार के शब्दों का प्रयोग करेंगे? अपना परिचय देने के लिए क्या आप उस समय अलग शब्दों का प्रयोग करेंगे जब आप अपने परिवार के साथ हो? जब आप अपने कार्यक्षेत्र में हो, क्या तब आप के शब्द कुछ और होंगे? आप किसी दूर स्थान की यात्रा पर हों तब क्या आप दूसरे शब्दों का प्रयोग करेंगे?

मैंने यह अनुभव किया है कि अपना परिचय देते समय मेरे द्वारा प्रयोग में लाए जाने वाले शब्द बदल जाते हैं, जब मेरी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि बदलती है। जब हम टोरंटो में रहते थे, तब दो मूल शब्द जिनका प्रयोग मैं अपना परिचय देने के लिए किया करती थी वे थे, ''मसीही'' और ''महिला।'' मेरे जीवन के ये दो पहलू थे जो मेरी जीवन शैली को दूसरों से अलग दिखाते थे। बड़े आश्चर्य की बात है, कि जब हम दक्षिण अफ्रीका को चले गए तो ये दोनों शब्द मेरी पहचान के अनिवार्य अंग नहीं रहे! हम जिस किसी से बात करते थे वह मसीही था, इसलिए यह पहचान बताना मायने नहीं रखता था; और यह बात अधिक महत्वपूर्ण हो गई कि मैं एक महिला होने से बढ़कर एक माँ हूँ। दक्षिण अफ्रीका में सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि मैं गोरे रंग की थी – मेरी पहचान का एक ऐसा पहलू जो कनाडा में मायने नहीं रखता था।

एक मसीही महिला – ये कनाडा में मेरी पहचान के महत्वपूर्ण अंग थे। एक गोरी माँ – मेरी पहचान के ये दो अलग अंग लेसोथो में मेरे लिए सबसे महत्वपूर्ण बन गए। मेरी पहचान के प्रति मेरी समझ बदल गई, यद्यपि मुझ में कोई बदलाव नहीं आया था।

ये परिवर्तन उस पहले बिन्दु को दर्शाते हैं जो मैं आप के सामने प्रस्तुत करना चाहती हूँ: संस्कृति मायने रखती है, क्योंकि संस्कृति यह परिभाषित करती है कि हम कौन है?

मैं जिस दूसरी बात को आपके सामने रखना चाहती हूँ वह यह है कि भाषा मायने रखती है। मैंने अनेक भाषाएं थोड़ी थोड़ी सीखा है, और ऐसे शब्द मुझे मोहित कर देते हैं जो किसी एक ही भाषा में पाए जाते हैं और दूसरी भाषा में उनका सीधा अनुवाद नहीं किया जा सकता। सेसोथो में मैंने यह सीखा कि शरीर के उस भाग के लिए भी, जो टूटने या घाव होने के बाद देर से ठीक होता है, एक शब्द होता है – अंग्रेजी में ऐसा कोई शब्द नहीं होता। स्पेनिश और फ्रेंच भाषाओं में एक सुन्दर शब्द *एनिमेचर* या *एनिमेडोर* है, एक ऐसा व्यक्ति जो लोगों के एक समूह की मदद करते हुए उन्हें उत्साहित कर उनकी अगुवाई करता है, यह बात हिन्दी या अंग्रेजी में एक शब्द का प्रयोग करते हुए समझाई नहीं जा सकती। जर्मन भाषा में एक सुन्दर शब्द *जेमिनशाफ्ट* होता है, एक ऐसा शब्द जिसका अनुवाद अंग्रेजी में ''ब्रदरहुड'' (भ्रातृत्व) और ''कम्युनिटी'' (समुदाय) किया गया है, परन्तु ये शब्द इस जर्मन शब्द के अर्थ की गहराई को स्पष्ट कर पाने में असफल हैं। उपरोक्त प्रत्येक उदाहरण इस तथ्य पर बल देते हैं कि भाषा मायने रखती है, क्योंकि भाषाएं हमें ऐसी धारणाएं या समझ प्रदान करती हैं जो हमारी संस्कृति में महत्वपूर्ण होती हैं।

संसार भर की हमारी सारी विभिन्न भाषाओं के बीच कुछ गहरी भिन्नताएं पाई जाती हैं, ऐसे अन्तर जो इतने बड़े हैं जितना हमने कभी सोचा भी न हो। संस्कृति, जिसे रूप भाषा के द्वारा दिया जाता है, संसार के प्रति हमारे दृष्टिकोण और धारणा को, स्वयं के प्रति हमारी समझ को, और हमारी पहचान के प्रति हमारी समझ को प्रभावित करती है। और यह विशेष रूप से मसीहियों के लिए एक चुनौती है, जिनकी धारणाएं और दस्तूरों को संस्कृति और भाषा के द्वारा रूप दिया जाता है यद्यपि हमारा विश्वास इन बातों से ऊपर है।

बाइबल में भिन्नताओं के उदाहरण

बाइबल में कुछ रूपक और घटनाएं दी गई हैं जो संस्कृति में हमारी भाषाओं के अन्तरों को स्पष्ट करती और समझाती हैं – और हमें यह दर्शाती है कि किस तरह से ये भिन्नताएं कलीसिया के निर्माण में परमेश्वर की योजना का एक हिस्सा बन सकती हैं।

बाइबल की पहली पुस्तक, उत्पत्ति में बाबुल के गुम्मट की सच्ची घटना का वर्णन किया गया है। यह घटना दो कारण बताती है कि हमारे बीच में भिन्न भिन्न भाषा समूह क्यों हैं। एक कारण यह है कि एकरूपता पर आधारित एकता घमण्ड उत्पन्न करती है, और दूसरा कारण यह है कि एकरूपता पर आधारित एकता भय को लेकर एक प्रतिक्रिया है। उत्पत्ति 11:4–6 में, हम यह पढ़ते हैं कि लोग अपना नाम करना चाहते थे और वे फैल कर रहने से डरते थे। दोनों ही प्रवृत्तियों की जड़ परमेश्वर पर निर्भरता की बजाए स्वयं पर निर्भरता में पाई जाती हैं: ''मैं क्या देखता हूँ, कि सब एक ही दल के हैं, और भाषा भी उन सब की एक ही है, और उन्होंने ऐसा ही काम भी आरम्भ किया।''

बाइबल के विद्वान वॉल्टर ब्रयूग्गमैन कहते हैं कि यह ऐसे लोगों की एक कहानी है जो अपनी समानताओं (अपने समान

साँचों) के कारण महान बनना चाहते थे – समान भाषा, समान भोजन, समान कपड़े, समान संस्कृति। एक समान संस्कृति में रह कर बहुत कुछ किया जा सकता है। ब्रयूग्गमैन कहते हैं कि परमेश्वर ने लोगों को इसलिए तितरबितर कर दिया कि उन्हें एक बेहतर मार्ग दिखा सके। परमेश्वर मानव जाति के लिए एक ऐसी एकता को चाहता है जिसमें अनेक प्रकार के लोग एक ही विश्वास और समान नैतिक मूल्यों के आधार पर एक साथ आएं, भाषा और संस्कृति के आधार पर नहीं। ब्रयूग्गमैन कहते हैं कि इस कहानी में बहुत सी भाषाओं का अस्तित्व में आ जाना और लोगों का बिखर जाना कोई दण्ड नहीं है, परन्तु यह वास्तव में अधिक बड़ी क्षमता के साथ जीवन जीने का एक अवसर है, जो कि पृथ्वी के लिए परमेश्वर की इच्छा है। परमेश्वर ने बाबुल का गम्मट बना रहे लोगों को भिन्नताओं का अनुभव करने का अवसर दिया ताकि वे परमेश्वर पर निर्भर रहना सीख सकें और संस्कृति नहीं, बल्कि विश्वास के आधार पर एक साथ आएं। परमेश्वर हमें जो बनाना चाहता है वैसा बनने के लिए एक वैश्विक ग्राम की आवश्यकता है।

भिन्नता के सम्बन्ध में एक अन्य उदाहरण बाइबल की दूसरी छोर पर मिलता है – बाइबल की अन्तिम पुस्तक, प्रकाशितवाक्य में। प्रकाशितवाक्य 7:9–14 में, हम यह पढ़ते हैं कि अनगिनत संख्या में, हर एक जाति, हर एक गोत्र और हर एक भाषा के लोग, सब एक साथ मिल कर परमेश्वर की स्तुति के गीत गा रहे थे और उसकी आराधना कर रहे थे। यह बाबुल के गुम्मट के चित्र के विपरीत है। यह स्वर्ग की एक छोटी सी झलक है!

यह चित्र प्रकाशितवाक्य में सात मुहरों को खोले जाने के वर्णन का एक भाग है – सात मुहरों से सात घटनाएं जुड़ी हुई हैं जिनके परिणाम लोगों के लिए बहुत ही भयानक हैं। यह चित्र वास्तव में, छठवीं और सातवीं मुहर खोले जाने के बीच की घटना है, यह कहानी में एक लघु विराम की तरह है। यहाँ पर परमेश्वर के लोगों का एक चित्र दिया गया है जो हर एक संस्कृति, और हर एक भाषा का प्रतिनिधित्व करते हुए, उन पर आ रहे सताव, प्रकोप, और क्लेश की परवाह किए बिना, एक साथ मिलकर परमेश्वर की आराधना कर रहे हैं।

पिछले अध्याय में (प्रकाशितवाक्य 6:17 में), एक प्रश्न पूछा गया है: ''उन के प्रकोप का भयानक दिन आ पहुँचा है, अब कौन ठहर सकता है?'' इसका उत्तर इसी चित्र में दिया गया है: हर एक देश, हर एक भाषा से बहुसंस्कृति का प्रतिनिधित्व करने वाले परमेश्वर के वे लोग जो एक साथ मिल कर परमेश्वर की आराधना और स्तुति करते हैं, और जो सताव और क्लेश में स्थिर रह सकते हैं। परमेश्वर हमें जिस तरह के लोग बनाना चाहता है, वैसे लोग बनने के लिए एक वैश्विक ग्राम की, और सताव के मध्य मजबूती से दृढ़ बने रहने की आवश्यकता है।

हमें परमेश्वर के बहुसांस्कृतिक लोग बनना है

इस्राएल में यहूदी लोगों के लिए, जो यह सोचते थे कि सिर्फ वे ही परमेश्वर के चुने हुए लोग हैं, बहुसांस्कृतिक लोगों का यह चित्र उनकी सोच में एक बहुत ही बड़ा बदलाव है। इफिसियों 3 में, पौलुस ने बिल्कुल सीधे सीधे कहा है कि एक समय गैरयहूदी न सिर्फ परदेशी और बाहरी थे परन्तु खतनारहित

स्विट्ज़रलैण्ड बासिल में आयोजित 2012 एमडबल्यूसी जनरल कॉउन्सिल सभा के दौरान विश्व भर से आए ऐनाबैपटिस्ट प्रभु भोज की सहभागिता करते हुए। फोटो: मर्ले गुड

भी, और इसलिए वे इस्राएल का अंग नहीं थे, वे परमेश्वर की प्रजा का अंग नहीं थे। पौलुस यह निष्कर्ष सामने रखता है कि, परन्तु अब मसीह के द्वारा वे परमेश्वर के लोग हैं, और पूरी तरह से परमेश्वर के लोग है। पौलुस की इस टिप्पणी ने यहूदी मसीहियों के विचारों में बहुत बड़ा परिवर्तन लाया। तभी वे यह समझ सके कि यहूदी परम्परा, विशेष कर वे परम्पराएं जो उनकी पहचान थी, जैसे खतना और खाने पीने से सम्बन्धित नियम, के अलावा भी परमेश्वर की आराधना करने के भिन्न भिन्न तरीके हो सकते हैं।

हम में से वे लोग जो यह समझते हैं कि परमेश्वर की आराधना करने या परमेश्वर को समझने का हमारा तरीका ही सहीं या सबसे अच्छा है, उन के लिए प्रकाशितवाक्य में परमेश्वर के बहुसांस्कृतिक लोगों का चित्र विचारों में बहुत बड़ा परिवर्तन लाने वाला चित्र है। परमेश्वर हमें जिस तरह के लोग बनाना चाहता है, वैसा बनने के लिए एक वैश्विक ग्राम आवश्यक है।

हम सब की अपनी अपनी संस्कृति है, और हमारी सांस्कृतिक परम्पराएं और भाषाएं ऐसे माध्यम हैं जिसके द्वारा हम परमेश्वर को समझते और उसकी आराधना करते हैं। परमेश्वर की आराधना करने और समझने के हमारे तरीकों में बहुत सी विशेषताएं हैं। परन्तु हमारे तरीके ही एकमात्र तरीके नहीं है! हमारे तरीके हमारे लिए सुविधाजनक और चिरपरिचित हैं, और हमारे अगुवे बाइबल के आधार पर विस्तारपूर्वक स्पष्टिकरण दे सकते हैं कि हम अपनी परम्पराओं और तौर तरीकों को सहीं क्यों मानते हैं।

बाबुल के गम्मुट को बनाने वाले लोगों के समान, हम भी अनेक बार डर जाते हैं कि भिन्नताओं के कारण एकता टूट जाएगी और हमें बिखरा देगी। अक्सर हम अपने आप को एक साथ जोड़े रखने के लिए भाषा और संस्कृति और परम्पराओं पर निर्भर रहते हैं, जबकि हमें परमेश्वर के तरीकों पर निर्भर रहना चाहिए कि वह हमारी भिन्नताओं में भी हमें एक साथ जोड़ कर रखे। हमें प्रकाशितवाक्य के लोगों के समान बनने की आवश्यकता है, अलग अलग संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते हुए एक साथ मिल कर परमेश्वर की आराधना और स्तुति करता हुआ बहुसांस्कृतिक समूह, जो सभी सतावों का सामना कर पाने में सक्षम है। परमेश्वर हमें जैसे लोग बनाना चाहता है, वैसे लोग बनने के लिए एक वैश्विक ग्राम की आवश्यकता है।

पृथ्वी पर स्वर्ग की एक झलक

समाजशास्त्र की छात्रा के रूप में, मैंने यह सीखा है कि प्रत्येक समूह अपनी पहचान बनाने, किसी कार्य को अपने तरीके से करने का ढंग निर्धारित करने के लिए बहुत परिश्रम करते हैं, और इस तरह के एक समूह का हिस्सा होना महत्वपूर्ण

भी है। हम सब किसी समूह का हिस्सा बनना चाहते हैं जिसकी विशेषताओं और पहचान का हम भी एक अंग होते हैं; किसी समूह का हिस्सा बनना अच्छी बात है! किन्तु उत्पत्ति, प्रकाशितवाक्य, और इफिसियों में पाए जाने वाले ये वर्णन हमारी सहायता करते हैं कि हम यह समझ पाए कि परमेश्वर चाहता है कि हम यीशु मसीह के अन्य अनुयायियों के साथ अपनी प्राथमिक पहचान को साझा करे, बजाए कि उनके साथ जो हमारी भाषा, हमारी संस्कृति, या हमारी जाति के लोग हैं। हम एक ऐसे समूह के सदस्य हैं जिसके विश्व के प्रति दृष्टिकोण को परमेश्वर, बाइबल, और हमारे विश्वास के समुदाय के द्वारा दिशा दी गई है। हमारी प्राथमिक पहचान मसीहियों के रूप में है। हम एक स्थानीय कलीसिया और एक विश्वव्यापी कलीसिया के सदस्य हैं। हम कौन है, इस तथ्य पर हमारी यह पहचान और हमारी यह सदस्यता प्राथमिक रूप से असर डाले।

हमारी मण्डलियाँ वे स्थान हैं जहाँ के हम सदस्य हैं, जहाँ हम एक दूसरे को जानते हैं और जहाँ हम समान शैली की आराधना में शामिल होते और समान तरीकों से यीशु के पीछे चलते हैं। एक स्थानीय कलीसिया का सदस्य होना, जहाँ हम सब समान तरीके से गीत गाते हैं या समान तरीके से प्रार्थना करते हैं, अच्छी बात है। हम में से अनेक क्षेत्रीय या राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंसो के भी सदस्य हैं – एक अन्य ढांचा या जमावट जहाँ हम समान प्रथाओं और परम्पराओं के भागी बनते हैं जो हमें एक समान पहचान में बान्धती हैं। और मैं जानती हूँ कि तौभी मण्डलियों और कान्फ्रेंसों में हमेशा पर्याप्त कारण होते हैं कि आप में झगड़े और तनाव हो। इन झगड़ों का दायरा और भी बढ़ जाता है जब हम किसी देश की, अलग अलग संस्कृतियों, भाषाओं, और देशों की बहुत सारी मण्डलियों और बहुत सारे कॉन्फ्रेंसों को एक साथ ले आते हैं।

मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस और किसी स्थानीय कलीसिया या कॉन्फ्रेंस के सदस्य होने में अन्तर है। एमडबल्यूसी हमारा वैश्विक ऐनाबैपटिस्ट कलीसिया समुदाय है, जहाँ हम इसलिए एक साथ आते हैं क्योंकि हम परमेश्वर, यीशु मसीह, पवित्र आत्मा और कलीसिया से सम्बन्धित विश्वास के भागी बनते हैं। यह एक ऐसा स्थान है जहाँ हम पृथ्वी पर स्वर्ग की एक बहुत छोटी सी झलक पा सकते हैं – इस बात की एक छोटी सी झलक कि अलग अलग जाति, अलग अलग संस्कृति, और अलग अलग भाषा के अन्य लोगों की भीड़ के साथ मिलकर परमेश्वर की आराधना करने में कैसा लगता है। परमेश्वर हमें जिस तरह के लोग बनाना चाहता है यह उसकी एक झलक है – उसके लोगों का एक ऐसा समूह जो भाषा, संस्कृति, या स्थानीय परम्पराओं और प्रथाओं से हट कर एक बन्धन में बन्धे हुए हैं।

एमडबल्यूसी हमारे लिए एक ऐसा स्थान है जहाँ हम अपनी विविध संस्कृति से यह सीख सकें कि यीशु मसीह के पीछे चलने का अर्थ क्या है। मैं समझती हूँ कि हम इस प्रश्न का बेहतर उत्तर, ''वर्तमान में मेरी संस्कृति के सन्दर्भ में ऐनाबैपटिस्ट मसीही होने का अर्थ क्या है?'' यह जानने के द्वारा दे सकते हैं कि अन्य संस्कृतियों के सन्दर्भ में लोग इस प्रश्न का क्या उत्तर देते हैं। एमडबल्यूसी एक ऐसा स्थान है जहाँ हम विश्वास की इस यात्रा में अन्य लोगों के साथ चलते हुए आगे बढ़ते हैं जो हम से अलग हैं – अलग अलग संस्कृति के, अलग अलग देश के, यहाँ तक कि अलग अलग कॉन्फ्रेंसों के अलग अलग प्रकार के ऐनाबैपटिस्ट। एमडबल्यूसी एक ऐसा स्थान है जहाँ हम अपनी समान धारणाओं के आधार पर एक बन्धन में बन्धते हैं। एक साथ मिलकर, हम पृथ्वी पर स्वर्ग की एक हल्की सी झलक हैं। एक साथ मिलकर, हम इतने मजबूत हैं कि सताव और परीक्षाओं का सामना कर सकते हैं।

सब पवित्र लोगों के साथ मिलकर

आइये एक बार फिर से हम पौलुस प्रेरित द्वारा इफिसुस के मसीहियों को लिखी गई पत्री की ओर ध्यान दें – यह यहूदी मसीहियों को नहीं, परन्तु अन्यजाति मसीहियों को लिखी गई थी। वह उन्हें अध्याय 2 और 3 में यह स्मरण दिलाता है कि वे परमेश्वर की प्रजा के संगी नागरिक हैं, वे परमेश्वर के घराने के पूर्ण सदस्य हैं और मसीह यीशु में पाई जाने वाली प्रतिज्ञा के भागी हैं। उस समय के लिए यह विचार एक अनोखा, नया, परन्तु विवादास्पद विचार था, और आज तक यह हमारे संसार में परमेश्वर के कार्यों के प्रति हमारी समझ में परिवर्तन लाता जा रहा है। हम परमेश्वर के घराने के पूर्ण सदस्य हैं, और यीशु मसीह में प्रतिज्ञा के भागी हैं, उन सारी बाधाओं के पार जो आसानी से हमें विभाजित कर देती हैं।

इफिसियों 3:14–21 में पौलुस इस अन्यजाति कलीसिया के लिए एक प्रार्थना कर रहा है। वह यह प्रार्थना करता है कि वे परमेश्वर के प्रेम की विशालता और अनन्तता को समझ सकें – परमेश्वर के प्रेम की चौड़ाई, लम्बाई, गहराई, और ऊँचाई को। और वह यह प्रार्थना करता है कि वे ''सब पवित्र लोगों के साथ'' मिलकर इस बात को समझे। मैं इस छोटे से वाक्यांश को यहाँ देखना बहुत पसन्द करती हूँ। मैं इसे पढ़ कर यह कहना बहुत पसन्द करती हूँ कि हम परमेश्वर के प्रेम की अनन्तता को सब पवित्र लोगों के बिना नहीं जान सकते। विभिन्नताओं के झंझट और गड़बड़ी में ही – सांस्कृतिक, भाषाई, राजनैतिक, धर्मविज्ञानिक, और आर्थिक विभिन्नताएं – सब पवित्र लोगों के साथ मिलकर, हम परमेश्वर के प्रेम को समझना आरम्भ कर सकते हैं। परमेश्वर के प्रेम की अनन्तता को समझने के लिए, और वह हमें जिस तरह के लोग बनाना चाहता है वैसा बनने के लिए, एक वैश्विक ग्राम की आवश्यकता है।

दो मेनोनाइट बहनें, एक उत्तर अमरीका से और एक इण्डोनेशिया से, आपस में बातचीत कर रही हैं। ऐनाबैपटिस्ट लोगों के लिए, एमडबल्यूसी एक ऐसा स्थान है जहाँ ऐसे अन्तरसांस्कृतिक सम्पर्क बनाना सम्भव किया जाता है। फोटो: मर्ले गुड

अर्लि क्लासन मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस के लिए मुख्य विकास अधिकारी के रूप में अपनी सेवाएं देती हैं।

विश्वव्यापी सहभागिता और इसका महत्व

एक विश्वव्यापी परिवार बनने की हमारी समान प्रतिबद्धता की समीक्षा

मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस के रूप में, हम विश्वास और जीवन की एक विश्वव्यापी सहभागिता *(कोइनोनिया)* बनने की एक प्रतिबद्धता के भागीदार हैं। एक साथ मिलकर, हम एक ऐसी सहभागिता करने का प्रयास करते हैं जो राष्ट्र, नस्ल, वर्ग, लिंग और भाषा की सीमाओं से ऊपर है। तौभी, अपनी विविधता के कारण, एमडबल्यूसी की प्रत्येक सदस्य कलीसिया एमडबल्यूसी में शामिल होने और अपना योगदान देने के द्वारा विश्वव्यापी सहभागिता के महत्व की एक विशिष्ट समझ प्रदान करती है। *Courier/Correo/Courrier* का यह अंक उन विविध कारणों को पहचानने का प्रयास है कि संसार भर से ऐनाबैपटिस्ट समुदाय एक साथ आ कर एमडबल्यूसी का रूप क्यों लेता है। इस लेख में, लेखक ने इस प्रश्न पर प्रकाश डाला है: मेरी स्थानीय या क्षेत्रीय सहभागिता को एक विश्वव्यापी संगति की आवश्यकता क्यों है?

हाड़-माँस वाला यीशु

डेरेल विंगर

''एक रात भयानक आँधी चल रही थी, आधी रात हॉल के बाद वाले शयनकक्ष से एक हल्की सी आवाज़ आई। ''माँ, मुझे डर लग रहा है!'' माँ ने सहानुभूति जताते हुए उत्तर दिया, ''बेटा, डरो मत, मैं पास के ही कमरे में हूँ।'' कुछ समय बाद, कुछ ही दूर जब बादल गरजने की आवाज आई, तो छोटे बच्चे ने फिर आवाज लगाई, ''मुझे अब भी डर लग रहा है!'' माँ ने उत्तर दिया, ''तुम्हें डरने की जरूरत नहीं है। अपनी आँखे बन्द करो और प्रार्थना करो। और ध्यान रखो कि यीशु हर समय तुम्हारे साथ है।'' इस बार काफी देर तक आवाज नहीं आई – परन्तु अन्त में फिर से वहीं आवाज आई और इस बार बच्चा माँ के बिस्तर के पास खड़ा हुआ था: ''मम्मी क्या आज रात मैं आप के और पापा के साथ सो सकता हूँ?'' माँ अपना धीरज खोने पर ही थी, तभी उसके छोटे बच्चे ने उसकी आँखों को देख कर यह जान लिया और तुरन्त कहा, ''माँ मैं जानता हूँ कि यीशु हर समय मेरे साथ है, परन्तु इस समय मुझे हाड़-माँस वाले यीशु की आवश्यकता है।''''

मैं जितनी बार इस छोटी कहानी को सुनता हूँ, यह सोच कर मैं मुस्कुरा उठता हूँ कि इस कहानी की सच्चाई को कितने विनोदी भाव से प्रस्तुत किया गया है। जीवन में ऐसे नाज़ुक समय आते हैं जब हमें किसी ऐसे व्यक्ति की उपस्थिति की आवश्यकता होती है कि वह यीशु की भौतिक उपस्थिति का अहसास दिलाए – किसी ऐसे व्यक्ति की जो ''हाड़ माँस वाला यीशु'' बन कर हमें शान्ति, शक्ति दे या उस समय की हमारी किसी अत्यंत महत्वपूर्ण आवश्यकता की पूर्ति करे। मैं यह कल्पना कर सकता हूँ कि इस छोटे से बच्चे की इच्छा के समान इच्छा रखने वाले बहुत से लोग हैं।

इसी तरह से ऐसी बहुत सी आत्मिक सच्चाइयाँ हैं जिन पर ''हाड़ माँस चढ़ाए जाने'' की आवश्यकता है, उन्हें एक ठोस रूप दिए जाने की आवश्यकता है, ताकि ये हमारे लिए वास्तविक बन सकें। कनाडा की ब्रदरन इन ख्राइस्ट (बीआइसी) मण्डलियों के लिए, मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस इस महत्वपूर्ण सच्चाई को एक ठोस रूप प्रदान करती है कि हम एक ऐसे कलीसिया परिवार के सदस्य हैं जो संसार भर में फैला हुआ है। हम यह जानते हैं कि हर स्थान के यीशु के अनुयायी उस पर विश्वास लाने के माध्यम से एक बनाए गए हैं; किन्तु, हम इस अनमोल सच्चाई को व्यवहारिक रूप से अनुभव कर सकते हैं क्योंकि एमडबल्यूसी ने हमारे लिए इस सच्चाई पर ''हाड़ माँस चढ़ाया है।'' जबकि एमडब्लयूसी ने मसीह में हमारी विश्वव्यापी सहभागिता की वास्तविकता को एक मूर्त रूप प्रदान किया है, इसके द्वारा बीआईसी कनाडा की हमारी मण्डलियाँ अनेक महत्वपूर्ण तरीकों से सुदृढ़ होती हैं।

सबसे पहले, मसीह के लिए हमारी गवाही दृढ़ होती है। कनाडा संसार के सबसे अधिक बहुसांस्कृतिक देशों में से एक है। यदि आप हमारे शहरों में कुछ समय बिताएं, हमारी गलियों में चहलकदमी करें, शॉपिंग मॉल में खरीदने के लिए जाएं, या हमारे स्कूलों को देखने जाएं, तो बहुत जल्दी आप यह देख पाएंगे कि यहाँ विविध नस्ल, भाषा, विश्वास और संस्कृति के लोग पाए जाते हैं। प्रत्येक वर्ष संसार के हर क्षेत्र से हजारों की संख्या में नए लोग पलायन कर यहाँ आते हैं, जिससे यह विविधता बढ़ती ही है। जब हम प्रेमपूर्वक अपने पड़ोसियों और सहकर्मियों के पास यीशु का सन्देश ले कर जाते हैं, तब हमारी बीआईसी कलीसियाओं में यह विविधता लगातार झलकती जाती है। यह सच्चाई कि सुसमाचार सारी जातीय

> **''जबकि एमडब्लयूसी ने मसीह में हमारी विश्वव्यापी सहभागिता की वास्तविकता को एक मूर्त रूप प्रदान किया है, इसके द्वारा बीआईसी कनाडा की हमारी मण्डलियाँ अनेक महत्वपूर्ण तरीकों से सुदृढ़ होती हैं।''**

और सांस्कृतिक दूरियों को भर देता है ऐसी मण्डलियों के माध्यम से वास्तविक और दृश्य रूप ले लेती है जो वास्तव में उनके आसपास की जनसांख्यिक वास्तविकताओं को परिलक्षित करती हैं।

एमडबल्यूसी के साथ हमारी सहभागिता इसी प्रतिबद्धता को व्यक्त करती है: मसीह में हम सब एक विश्वव्यापी परिवार बन जाते हैं। एमडब्लयूसी हमारी मण्डलियों के लिए एक ठोस माध्यम प्रदान करती है जिसके द्वारा हम इस सच्चाई को समझ सकते हैं और प्रगट कर सकते हैं। इसके परिणामस्वरूप, यह मसीह में ही सम्भव शान्ति की गवाही को और दृढ़ करती है। विभिन्न पृष्ठभूमियों से हमारी मण्डलियों में आने वाले लोग यहदेख सकते हैं कि यीशु के द्वारा दिया गया मेलमिलाप का सन्देश शब्द मात्र से बढ़ कर है।

दूसरा, जब हम एमडबल्यूसी के कार्यक्रमों और गतिविधियों में शामिल होते हैं, तब शिष्यता की हमारी प्रक्रिया भी दृढ़ होती है। बीआईसी कनाडा के सदस्यों के रूप में हमें पूरा निश्चय है कि यीशु के समान बनने का प्रमुख तरीका स्थानीय और विश्व स्तर पर आपसी और संवेदनशील सम्बन्ध विकसित करने में है। एमडबल्यूसी अवसर प्रदान करती है कि हम दूसरों के निकट रह सकें, अन्यथा हम दूर रहते। समुदाय में दूसरों के साथ रहने से – एक दूसरे की गवाहियों को सुनकर, एक दूसरे के आनन्द और दुखों को बाँट कर, और दूसरों के दृष्टिकोण से सच्चाई को समझ कर – जो आत्मिकता रूप लेती है वह एमडबल्यूसी के द्वारा आती हैं। विश्वव्यापी घराना परमेश्वर के राज्य की सच्चाइयों को अधिक रीति से समझ सकता हैं जितना कि हम नहीं जो सिर्फ कनाडा तक सीमित हैं।

हमारी एक मण्डली दक्षिण अफ्रीका से आए कुछ ऐनाबैपटिस्ट मित्रों के साथ बिताए गए समय को स्मरण करती है, दक्षिण अफ्रीका के इन मित्रों ने इस मण्डली की सहायता की कि यह मण्डली अपने आत्मिक युद्ध के उन पहलुओं को पहचान पाए जिन्हें वह देख नहीं पा रही थी, साथ ही इन भाइयों ने प्रार्थना और आराधना के द्वारा इस मण्डली को प्रोत्साहित किया। हमारे भाई और बहनों के पास, जिन्हें निर्धनता और सताव से बहुत संघर्ष करना पड़ा था, हमें सिखाने और हमारे साथ बाँटने के लिए बहुत कुछ था। आपस में एक दूसरे के साथ ऐसी चर्चाएं हमें अपनी दिशा में सुधार लाने का अवसर देती हैं, व्यक्तिगत स्तर पर और कलीसियाई स्तर पर भी, जब हम उन वास्तविकताओं के साथ सीध मिला कर खड़े हो जाते हैं जो विश्वव्यापी परिवार के भीतर मित्रता के द्वारा सामने आती हैं।

जिस तरीके से हम अपना जीवन व्यतीत करते हैं, जिस तरह से हम अपना समय और धन खर्च करते हैं, जिस तरीके से हम अपनी उर्जा का सदुपयोग करते हैं और उन दुखों को अपनाते हैं वह तरीका बदल जाता है जब हम संसार भर के लोगों के साथ मिलकर एक परिवार का रूप लेते हैं और एक दूसरे के निकट आते हैं। हम विश्वव्यापी सहभागिता में जितना अधिक लिप्त होते हैं, हमारे जीवनों में, हमारी कलीसियाओं में, मसीह की समानता में बढ़ते जाने के लिए जिन गहरे परिवर्तनों की आवश्यकता है उन परिवर्तनों को अपनाना उतना ही स्वाभाविक लगने लगता है।

हम एमडबल्यूसी के सदस्य बन कर आशीषित है, एमडबल्यूसी बीआईसी की हमारी मण्डलियों के लिए ''हाड़ माँस वाला यीशु'' है।

डारेल विंगर ने ब्रदरन इन ख्राइस्ट, कनाडा के बिशप/कार्यपालन निदेशक के रूप में 1997–2004 और 2009 से 2013 तक और ब्रदरन इन ख्राइस्ट उत्तर अमरीका के महासचिव के रूप में 2004–2006 तक सेवाएं दी हैं। अनेक वर्षों तक उन्होंने इन्टरनेशनल ब्रदरन इन ख्राइस्ट एसोसिएशन में अगुवाई की। वर्तमान में, डारेल टोरंटो स्कूल ऑफ थियोलॉजी से राजनैतिक धर्मविज्ञान में पीएचडी कर रहे हैं।

विश्वव्यापी कलीसिया की एक झलक

रेनर डबल्यू, बुरकार्ट

मैं एनकेनबाक नगर की मेनोनाइट मण्डली में पासवान के रूप में सेवकाई करता हूँ, यह नगर दक्षिणपश्चिम जर्मनी के पैलेटिनेट क्षेत्र में कैसेरस्लॉटर्न शहर के पास स्थित है। हमारी कलीसिया में 260 सदस्य हैं और रविवार की नियमित आराधना में औसतन 100 व्यक्ति उपस्थित रहते हैं।

इस मण्डली की स्थापना द्वितीय विश्व युद्ध के बाद पूर्व व पश्चिम प्रशिया (अब पोलैण्ड) से आए मेनोनाइट शरणार्थियों के द्वारा की गई थी, जिन्हें युद्ध के कारण अपना देश छोड़ना पड़ा था। (जबकि, पैलेटिनेट क्षेत्र की अन्य कलीसियाओं का आरम्भ 17वीं शताब्दी में हुआ था जब मेनोनाइट शरणार्थियों ने सताव से बचने के लिए शरण ढूंढ़ने स्वीट्ज़रलैण्ड से पलायन किया था)। एनकेनबाक में, गैर जर्मन युवाओं ने, जो मेनोनाइट सेन्ट्रल कमेटी की पीएएक्स परियोजना (युद्ध पश्चात राहत पहुँचाने का एक प्रयास) के अन्तर्गत यूरोप में सेवा कर रहे थे, यहाँ पर मेनोनाइट शरणार्थियों को बसाने के लिए घरों का निर्माण किया, जिससे कि हमारी मण्डली ने फलने फूलने लगी। वर्तमान में हमारे सदस्य या तो शरणार्थी है जो अपनी युवावस्था में यहाँ आए, या फिर पहली पीढ़ी के ''पैलेटिनेट'' जर्मन हैं।

हमारी मण्डली जर्मनी की सबसे बड़ी मण्डलियों में से एक है, *आरबेयट्सजेमेयिनशाफ्ट मेनोनाइटिसशेर जेमेयडेन* कॉन्फ्रेंस (रूसी–जर्मन पृष्ठभूमि की बड़ी कलीसियाओं को नहीं गिना गया) की औसत मेनोनाइट कलीसियाओं से काफी बड़ी।

स्थानीय मण्डली हमारे जर्मन मेनोनाइट परम्परा में एक बहुत महत्वपूर्ण भूमिका पूरी करती है। आरम्भिक ऐनाबैपटिस्ट लोगों ने स्थानीय मण्डलियों की केन्द्रीयता पर जोर दिया था, और इस कारण इस आन्दोलन को सताव के समयों में बने रहने में सहायता मिली। यद्यपि इन वर्षों के दौरान यह मण्डलीवाद कुछ कमजोरियों का कारण भी बना, जिसमें कभी कभी उपजी अभिमान (आत्म निर्भरता पर घमण्ड) की प्रबल भावना भी शामिल है। उदाहरण के लिए, हमारी मण्डली के अनेक सदस्य स्वयं को केवल मेनोनाइट नहीं, बल्कि ''एनकेनबाक के मेनोनाइट'' समझते हैं, और वे अन्य मेनोनाइट परम्पराओं में अधिक रूचि नहीं रखते। जब हमारी मण्डली आरम्भ हुई थी उस समय हमारी सदस्य संख्या लगभग 500 की थी और इन दशकों के दौरान सदस्यों की इस बड़ी संख्या ने ऐसी अनेक परियोजनाओं को संचालित किया जिससे कि हमारी कलीसिया दूसरे मेनोनाइट समूहों पर निर्भरता से मुक्त हो गई। सदस्यों की घटती संख्या के कारण अब इस स्थिति में परिवर्तन आ रहा है। तौभी एक वास्तविक खतरा बना हुआ है: यह सम्भावना कि मण्डलियों का एक दूसरे से सम्पर्क समाप्त हो जाएगा, और यह मानसिकता हावी हो जाएगी कि ''हम अपने आप में पर्याप्त हैं, दूसरी मण्डलियाँ अपने काम से मतलब रखें।''

सौभाग्यवश, जर्मनी के अनेक लोग – हमारी कलीसिया के भी अनेक लोग इसमें शामिल हैं – एक्तावाद या अखिल कलीसियावाद *(इक्यूमेनिज़म* – अपने अपने डिनोमिनेशनों की विशिष्ट शिक्षाओं से ऊपर उठ कर विश्व के सभी मसीहियों के बीच एकता) का बोझ रखते हैं। (यह शायद जर्मनी के इतिहास के परिणामस्वरूप विकसित हुआ, जिसमें 16वीं शताब्दी के सुधार काल में हुए प्रोटेस्टेंट–कैथोलिक महाविभाजन भी शामिल है। हम अन्य डिनोमिनेशनों के साथ सहयोग का एक निकट सम्बन्ध बनाना चाहते हैं ताकि संसार के सामने एक बेहतर गवाही प्रस्तुत कर सकें। हमारे नगर में, जिसमें कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट (संयुक्त कलीसिया) मण्डलियाँ पाई जाती हैं, एक अच्छी सहभागिता है। हम मसीही कलीसिया की एकता की एक अच्छी भावना रखते हैं।

साथ ही साथ, हमारी कलीसिया को यह समझने की भी आवश्यकता है कि हमारा ऐनाबैपटिस्ट–मेनोनाइट परिवार हमारी स्थानीय कलीसिया से बड़ा है। यह विस्तारित दृष्टिकोण मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस के साथ हमारी सहभागिता के कारण उत्पन्न होता है।

एमडबल्यूसी के साथ शामिल होने से हमें अनेक ठोस फायदे होते हैं। पहला, यह ऐनाबैपटिस्ट–मेनोनाइट के रूप में हमारी साझा पहचान को दृढ़ करने में सहायक हैं। हमारी स्थानीय कलीसिया में, हमने दो छोटे समूहों का गठन किया

> **''निश्चय ही कलीसिया के विषय में बाइबल पर आधारित समझ एक स्थानीय कलीसिया तक सीमित नहीं है . . . एमडबल्यूसी हमें परमेश्वर के लोगों की विश्वव्यापी, यहाँ तक कि सार्वभौमिक पहचान की एक झलक प्रदान करती हैं।''**

जिन्होंने एल्फ्रेड नियूफ़ेल्ड की पुस्तक, *वॉट वी बिलिव टूगेदर* की सहायता से एमडबल्यूसी की साझा धारणाओं को पढ़ा और अध्ययन किया, यह ग्लोबल ऐनाबैपटिस्ट शेल्फ ऑफ लिटरेचर की एक पुस्तक है, और एमडबल्यूसी इसे पढ़ने की अनुशंसा करता हैं। वर्तमान में, एक अन्य छोटा समूह, एमडबल्यूसी की अन्य पुस्तक, बेर्नहार्ड ओट्ट के द्वारा लिखी गई, *गॉड्स शालोम प्रोजेक्ट* का अध्ययन कर रहा है। दोनों ही पुस्तकें हमारे लिए सहायक है कि हम एक दूसरे के साथ अपने विश्वास और अपने व्यवहार के विषय में ''वार्तालाप करते रहे,'' साथ ही व्यापक ऐनाबैपटिस्ट परम्परा के विषय में विचार और विश्वास के मामले में भी यह सहायक है। हम इन्हें हमारे लिए निर्धारित किए गए या एक आदेशित दस्तावेज के रूप में नहीं पढ़ते; बल्कि, हम विचारों और विश्वास की एक व्यापक प्रक्रिया का हिस्सा बनना चाहते हैं। ये पुस्तके हमारे लिए अत्यंत सहायक सिद्ध हो रही हैं।

इसके अतिरिक्त, एमडब्यूसी के शामिल होने पर हमें यह भी स्मरण आता है कि ऐनाबैपटिस्ट मेनोनाइट परिवार गैरजर्मन (स्विस या प्रशियन) संस्कृति से, जिसमें ऐनोबैपटिस्टवाद का पहले पहले पोषण हुआ था, ऊपर उठ कर काफी आगे जा चुका है। उदाहरण के लिए, हम हर वर्ष अपनी कलीसिया में विश्व सहभागिता रविवार (डबल्यूएफएस) मनाते हैं, और इसके परिणामस्वरूप हम नियमित रूप से एमडबल्यूसी के भाई–बहनों के जीवन पर रोचक जानकारियाँ प्राप्त करते हैं। इसके अलावा, अपने कॉन्फ्रेंस के माध्यम से दिए जाने वाले एमडबल्यूसी फेयर शेयर के अतिरिक्त, हर वर्ष इस अवसर पर हम एमडबल्यूसी के लिए एक विशेष भेंट एकत्रित करते हैं।

2012 में, जब एमडबल्यूसी जनरल कॉन्सिल यूरोप में आयोजित की गई थी, हमने दो पाहुन वक्ताओं – जापान और डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ काँगो से बाइबल की महिला विद्वानों/पासवानों – को अपनी आराधना सभा में न्यौता दिया था। यह एक अनोखा अनुभव था और इससे हमें विश्वव्यापी, बहुसांस्कृतिक रूप में ऐनाबैपटिस्ट–मेनोनाइट परम्परा के विकास की एक झलक दिखाई दी। कुछ वर्ष पूर्व, 2011 में, हमारे लिए यह आशीष की बात थी कि एमडबल्यूसी के महासचिव सीज़र गार्सिया ने हमारी कलीसिया में आ कर एमडबल्यूसी की सेवकाई के सम्बन्ध में एक प्रस्तुतिकरण दिया। उनके साथ संगति करना हमारे लिए सहायक सिद्ध हुआ कि हम लोगों को विश्वव्यापी ऐनाबैपटिस्ट विश्वास की वास्तवकिता दिखा सकें।

साथ ही, हमें यह भी सुअवसर मिला कि हम इन्टरमेनो ट्रेनी प्रोग्राम (अदान–प्रदान की एक पहल जिसमें युवाओं को यूरोप में रह कर यूरोपीय संस्कृति और भाषा का सीधा अनुभव लेने के लिए आमंत्रित किया जाता है) के तहत उत्तर अमरीका के कुछ भाई बहनों की मेजबानी कर सकें। हमने पैरागुण के स्वयंसेवकों की मेजबानी की जिन्होंने हमारे मध्य अपनी सेवाएं दी थी। कुछ लोग तो यहीं रूक गए और यही विवाह कर लिया।

स्थानीय कलीसिया के इन कार्यक्रमों के अतिरिक्त, बड़ी संख्या में हमारे ऐसे सदस्य दशकों से एमडबल्यूसी के सम्मेलनों में भाग लेते आ रहे हैं जो इसका खर्च वहन कर सकते हैं, इन सदस्यों ने भारत (1997), जिम्बाब्वे (2003), और पैरागुवे (2009) के सम्मेलनों में भाग लिया। हर एक सम्मेलन से हमारे सदस्य काफी कुछ सीख कर और प्रभावित हो कर लौटे, और उन्होंने अपने अनुभवों को सब के साथ बाँटा।

निश्चय ही कलीसिया के विषय में बाइबल पर आधारित समझ एक स्थानीय कलीसिया तक सीमित नहीं है। अनेक जातियों और राष्ट्रों के मसीही स्थानीय पहचान से उठकर एक बन्धन में बन्धे हुए हैं। बाइबल के दृष्टिकोण से, कलीसिया विश्वासियों की एक ऐसी सहभागिता है जो जातियों, राष्ट्रों, और नस्ल की छाप से ऊपर है। यह सच्चे अर्थों में विश्वव्यापी देह है। स्थानीय मण्डली स्तर पर इसे सब को बताने और इसकी सच्चाई का अनुभव करने में सहायता करने के लिए हमें एमडबल्यूसी की आवश्यकता है। अनन्त:, एमडबल्यूसी हमें परमेश्वर के लोगों की विश्वव्यापी, यहाँ तक कि सार्वभौमिक पहचान की एक झलक प्रदान करती हैं।

रेनर डबल्यू बुरकार्ट एनकेनबाक मेनोनाइट चर्च इन एनकेनबाक जर्मनी में पासवान हैं। अपनी स्थानीय कलीसिया में सेवा करने के अतिरिक्त उन्होंने एमडबल्यूसी कार्यकारिणी समिति और फेथ एण्ड लाइफ कमीशन में सेवाएं दी हैं और लूथरन वर्ल्ड फेडरेशन/मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन कमीशन (2005–2008) में सहसभापति रहे, जिसने लूथरन और ऐनाबैपटिस्ट लोगों के बीच मेलमिलाप का एक आधार तैयार किया।

एक दूसरे पर निर्भर अस्तित्व

रबेका ओसिरो

मेरी स्वर्गीय माँ के किचन के पीछे एक छोटा सा बगीचा था जिसमें हर प्रकार की सब्जियाँ लगाई गईं थी, हमारी भाषा में इस प्रकार के बगीचे को *ओरूंडू* कहते हैं। *ओरूंडू* एक परीक्षण करने वाली भूमि की तरह भी काम में लाया जाता है जहाँ किसी भी नए बीज को लगाकर यह जाँचा जाता था कि इसमें अंकुरित होने और परिपक्व होने की कितनी क्षमता है। जाँचने के बाद, नए पौधे को एक बड़े खेत में रोपा जाता था, इस प्रकार के खेत को हम *पुओधो* कहते हैं।

अच्छी तरह देखभाल करने के बाद भी *ओरूंडू* में होने वाला उत्पादन परिवार के लिए पर्याप्त नहीं होता; तौभी *पुओधो* अनेक तरीकों से *ओरुंडू* से कुछ न कुछ प्राप्त करता है। मेरी बाल्यवस्था के दौरान, मेरा परिवार *ओरूंडू* में उत्पन्न सब्जियों के सहारे रहता था जब तक *पुओधो* की फसल तैयार नहीं हो जाती थी। *ओरुंडू* की देखभाल करना सरल था क्योंकि यह घर के पास रहता है जबकि *पुओधो* काफी बड़ा होता है, यह घर के पास नहीं होता और इसकी देखभाल में काफी मेहनत करना पड़ता है परन्तु यह बहुत सारी फसल देता है।

जब हम स्थानीय मण्डली और विश्वव्यापी कलीसिया परिवार के बीच सम्बन्ध की बात करते हैं, *ओरूंडू* और *पुओधो* इसके ठोस प्रतीक हैं, जिसके द्वारा हम स्थानीय कलीसिया के साथ विश्वव्यापी कलीसिया के सम्बन्ध के सार और इसकी अनिवार्यता को समझ सकते हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात, यह उपमा उन तरीकों को भी स्पष्ट करती है जिन तरीकों से विश्वव्यापी कलीसिया स्थानीय कलीसिया पर निर्भर रहती है, और स्थानीय कलीसिया विश्वव्यापी कलीसिया पर – इसे मैं एक दूसरे पर निर्भर अस्तित्व कहना पसन्द करती हूँ।

''विश्वव्यापी'' और ''स्थानीय'' ये दोनों शब्द अपने आप में एक दूसरे पर निर्भर हैं, विशेष कर तब जब हम कलीसिया को परमेश्वर पर विश्वास के आधार पर विश्वासियों को एक साथ लाए गए समुदाय के रूप में देखते हैं। एक पासवान और मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस की क्षेत्रीय प्रतिनिधि की हैसियत से, मेरे *ओरूंडू* के दो क्षेत्र हैं: द इस्टर्न फैलोशिप सेन्टर (इएफसी), जो कि केन्या के नैरोबी के पूर्वी भाग में एक छोटी सी मेनोनाइट मण्डली है, और इस्टर्न अफ्रीकन मेनोनाइट कम्युनिटी। मेरा कार्य चुनौतीपूर्ण है, क्योंकि दोनों ही स्वयंसेवी भूमिकाएं हैं। किन्तु, यीशु मसीह में सहभागिता की शोभा और स्थानीय व विश्वव्यापी सहभागिता की एक दूसरे पर निर्भरता सारी चुनौतियों पर हावी हो जाती है।

उदाहरण के लिए, इफएसी मण्डली में हम स्तुति, संगति, मुलाकात, शिक्षा, और सण्डे स्कूल की कक्षा के द्वारा अपनी आराधना एक ऐसी पृष्ठभूमि में करते हैं जहाँ के अधिकांश लोग प्रमुख रूप से सोमाली मूल के मुसलमान हैं। यह पृष्ठभूमि न सिर्फ चुनौतीपूर्ण हैं, परन्तु कभी कभी, यह हताश करने वाली भी है। यद्यपि हम अपने क्षेत्र की सरंचना व संस्कृति की सराहना करते हैं, और यह मानते हैं कि सब लोग परमेश्वर की सृष्टि हैं, विश्वास के मुद्दों में हमें एक बड़े समुदाय की आवश्यकता है – एक ऐसा विश्वव्यापी समुदाय जो हमारे स्थानीय क्षेत्र जहाँहम धार्मिक अल्पसंख्यक हैं से हट कर है, एक ऐसा समुदाय जिसमें हम संसार भर के मसीही भाई बहनों के साथ जुड़ जाते हैं। हमारा *ओरूंडू* सूख जाएगा यदि हम एक बड़े समुदाय के अस्तित्व व शक्ति के माध्यम से परमेश्वर से लगातार ढाढ़स, सामर्थ, और शान्ति नहीं पाएंगे, और इस बड़े समुदाय द्वारा उत्साहित नहीं किए जाएंगे।

इस्टर्न अफ्रीकन मेनोनाइट कम्युनिटी के साथ हमारी क्षेत्रीय सम्बद्धता विश्वव्यापी सम्पर्क कायम करने में हमारी मदद करती है। हम क्षेत्रीय स्तर पर साझेदारी करते हैं ताकि विश्वव्यापी समुदाय के साथ बेहतर पहचान बना पाएं और इसमें प्रभावी ढंग से सहभागिता कर सकें। विश्वव्यापी समुदाय के बगैर, क्षेत्रीय बैठकों का कोई अर्थ नही होगा। वे स्थानीय और विश्वव्यापी के बीच में प्रभावशाली माध्यम उपलब्ध कराते हैं। वे ऐसे गोंद हैं जो विश्वव्यापी और स्थानीय को दृढ़ता से एक साथ जोड़े रखते हैं। केन्या मेनोनाइट चर्च और

> ''हमारा स्थानीय समुदाय सूख जाएगा यदि हम एक बड़े समुदाय के अस्तित्व व शक्ति के माध्यम से परमेश्वर से लगातार ढाढ़स, सामर्थ, और शान्ति नहीं पाएंगे, और इस बड़े समुदाय द्वारा उत्साहित नहीं किए जाएंगे।''

कानिसा ला मेनोनाइट तन्ज़ानिया (मेनोनाइट चर्च ऑफ तन्ज़ानिया) के बिशपगण, कार्यकारिणी अधिकारी और राष्ट्रीय स्तर के विभिन्न विभाग विश्वासियों को एक साझा लक्ष्य – मसीह की एक देह बनना (1 कुरि. 12:27) की ओर बढ़ने में चरवाही की एक निर्णायक भूमिका पूरी करते हैं।

स्थानीय और विश्वव्यापी के बीच में सम्बन्धों के लाभ क्या क्या हैं?

सामंजस्य और तालमेल इसके अनेक लाभों में से एक है। समाजशास्त्रियों ने ''पराया'' या ''परायापन'' के धारणा की पहचान एक ऐसे बल के रूप में की है जो लोगों को बांटता है। परायापन स्वाभाविक नहीं है बल्कि यह निर्मित किया जाता है। लोग यह तय करते हैं कि ''भिन्न'' क्या है और फिर उसे अलग कर देते हैं। मसीह की देह में यह बहुत ही घातक हो सकता है। मसीहियों के रूप में, हम मसीह में एकत्व के भागी हैं, और भूगोल, संस्कृति, और जाति की भिन्नताओं के बावजूद, या आर्थिक असंतुलन या राजनैतिक संकटों के समय यह विशेष रूप से हमारा केन्द्रबिन्दु होना चाहिए। हमें कलीसिया के भीतर ''परायापन'' की किसी भी भावना को तोड़ने के जोरदार प्रयास करना चाहिए ताकि ''पीड़ित पराया'' हमारे बीच स्थान पा सकें और हम मसीही ''अनुग्रह दिखाने वाले पराये'' बन सकें। उदाहरण के लिए, गैर मसीही समुदाय की बहुलता के बीच इएफसी के सद्भावपूर्ण अस्तित्व को अनेदेखा नहीं किया जाना चाहिए।

एक विश्वव्यापी कलीसिया के रूप में, आइये हम उन क्षेत्रों में संघर्ष कर रहे अल्पसंख्यकों के साथ खड़े हों जहाँ सुसमाचार के कारण वे खतरे में हैं। समय आ चुका है कि हमें धर्मविज्ञान और अर्थशास्त्र के बीच सम्बन्ध पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता है। विश्वव्यापी कलीसिया को अपने सदस्यों के कल्याण की ओर लक्ष्य साधना चाहिए। निश्चय ही यह एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी है परन्तु यीशु ने यह स्पष्ट कर दिया है कि परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना सरल नहीं है (मत्ती 18:3–4; मर. 9:47; लूका 18:24–25), तौभी मसीह जो हमें सामर्थ देता है उससे हम सब कुछ कर सकते हैं (फिलि. 4:3)।

दूसरा लाभ है, पहचान। एमडबल्यूसी के अनेक मंचों में शामिल होने के बाद, मैं इस बात की गवाही दे सकती हूँ कि एक साझा पहचान बनाने के लिए बहुत प्रयास किए जा रहे हैं। ऐसे धर्मविज्ञान और धर्मविज्ञान की शब्दावलियाँ तैयार करना अत्यंत महत्वपूर्ण हैं जो एकरूपता नहीं बल्कि एकता की शिक्षा देंगे। विश्वव्यापी कलीसिया के मंच में सहभागी होने के द्वारा हम अपने सामाजिक वर्गों को फिर से आकार देने की आवश्यकता महसूस करते हैं और ऐसा करने के लिए समर्थ होते हैं जिससे कि मसीह की देह के रूप में एक साझा पहचान को बढ़ावा दिया जा सके। एक साझा पहचान हमें एकरूपता पाने के लिए बाध्य नहीं करती। इसकी बजाए, यह हमें स्थान प्रदान करती है कि हम अपनी सुविधाओं के घेरे से ऊपर उठ कर एक सार्थक और योग्य सहभागिता में शामिल हों।

जब हम एक साथ एक विश्वव्यापी समुदाय में शामिल होते हैं तो हम अपने सामाजिक वर्गों को पहचान कर उन्हें सकारात्मक रूप से फिर से आकार देने का प्रयास कर सकते हैं।

सहमति, असहमति, और समझौते की बातचीत हमारी पहचान को फिर से आकार देने में एक लाभप्रद अंग की भूमिका पूरी करते हैं। इन लाभप्रद मतभेदों के डर से हमें संगति से दूर नहीं रहना चाहिए, क्योंकि ऐसा करना परमेश्वर के साथ जैसी संगति हम करना चाहते हैं वैसी संगति के द्वार बन्द करने जैसा होगा। अनन्त: हम आपसी वार्तालाप और इन वार्तालापों पर अपने आत्म चिन्तन के आधार पर अपने आचरणों और अपनी छवि को ढालते हैं।

समापन में, जबकि अगला मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस सम्मेलन का समय निकट आता जा रहा है और हम इसकी तैयारी में लगे हुए हैं, हमारे दिमाग में न उदारवादी, न रूढ़िवादी, और न मध्यवादी विचार हावी हों। बल्कि, ''मसीह की देह की सहभागिता'' हमारा मूलमंत्र हो। हमें *ओरूंडू* और *पोओधो*, स्थानीय और विश्वव्यापी दोनों की आवश्यकता है। हमें आपस में एक दूसरे की आवश्यकता है।

रेबेका ओसिरो एक पासवान/धर्मज्ञानी और केन्या मेनोनाइट चर्च की पहली अभिषिक्त महिला है। वह एमडबल्यूसी की इस्टर्न अफ्रीकन रिजनल रिप्रेसेन्टेटिव्ह और एमडबल्यूसी फेथ एण्ड लाइफ कमीशन की एक सदस्या है। इसके अतिरिक्त, उन्होंने मेनोनाइट, कैथोलिक, और लूथरनों की त्रिपक्षीय वार्ता में एमडबल्यूसी का प्रतिनिधित्व किया है।

इकट्ठा होने में सामर्थ है

सिंथिया पीकॉक

विगत दिनों, मुझे यह अवसर मिला कि मैं भारत के मेनोनाइट/ऐनाबैपटिस्ट और ब्रदरन इन ख़ाइस्ट के सभी नौ कॉन्फ्रेंसों की यात्रा कर सकूं। इन कॉन्फ्रेंसों की अधिकांश मण्डलियाँ (गृह कलीसियाएं भी) ग्रामीण क्षेत्रों में हैं जहाँ गैरमसीहियों की संख्या मसीहियों की संख्या से बहुत अधिक है। अधिकांश कलीसियाओं में सदस्यों की संख्या बहुत कम है और भोगौलिक कमियों और पर्याप्त संसाधनों की कमी के कारण, वे प्रत्येक सदस्य से व्यक्तिगत मुलाकात कर उन्हें आत्मिक पोषण दे पाने में असमर्थ हैं। इसके परिणामस्वरूप, इनमें से अनेक मण्डलियाँ अल्पसंख्यक प्रवृत्ति के आगे हार मान गई हैं, और अकेलेपन, भय, भरोसाहीनता, और यहाँ तक त्याग दिए जाने की भावना से ग्रसित हैं।

ऐसी स्थिति में, यह जान पाना बहुत कठिन है कि परमेश्वर के एक बड़े परिवार का हिस्सा बनने का अर्थ क्या है। यद्यपि ये मण्डलियाँ अपने क्षेत्रीय या राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंसों से परिचित हैं, जिनकी ये सदस्य मण्डलियाँ हैं, परन्तु एक विश्वव्यापी सहभागिता को लेकर उनमें कोई समझ नहीं है।

इसी सच्चाई ने मुझे हाल ही में भारत और नेपाल के कॉन्फ्रेंसों की यात्रा के लिए प्रेरित किया, इस यात्रा में मेरे साथ अनेक विश्वव्यापी ऐनाबैपटिस्ट अगुवे भी शामिल थे: मधुकांत मसीह, मेनोनाइट क्रिश्चन सर्विस फैलोशिप (एमसीएसएफआई) के नए डॉयरेक्टर, यह एक अन्तरमेनोनाइट एजेंसी हैं जो भारत की नौ मेनोनाइट–सम्बन्धित कॉन्फ्रेंसों के लिए एक मंच उपलब्ध कराती है कि वे संगति और समाज में सेवा करने के लिए एक दूसरे से जुड़े रहें; हेंक स्टेनवर्स, मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस के डीकन कमीशन के सचिव; और सीज़र गार्सिया, एमडबल्यूसी के जनरल सेक्रटरी। हमारी यात्रा का एक लक्ष्य यह था कि एमसीएसएफआई और एमडबल्यूसी के बारे में लोगों को जानकारी दें और दोनों संस्थाओं की विभिन्न भूमिकाओं और कार्यक्रमों को समझाएं। दूसरा लक्ष्य – और शायद सबसे महत्वपूर्ण – यह था कि प्रत्येक कॉन्फ्रेंस की मदद करें कि वे विश्वव्यापी सम्बन्ध के बारे में समझ हासिल कर सकें। हम चाहते थे, कि वे यह समझ पाएं कि एमडबल्यूसी के माध्यम से, हम मसीह में भाई–बहनों के रूप में जुड़े हुए हैं।

अपनी यात्रा के दौरान हमने यह पाया कि बहुत ही कम लोग एमडबल्यूसी के बारे में जानते हैं। (जो लोग भी एमडबल्यूसी के बारे में जानते हैं, वे वही लोग हैं जिन्होंने कलकत्ता में 1997 में मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस के सम्मेलन में भाग लिया था।) हमने स्थानीय संगति के विषय से अपनी बात आरम्भ की और फिर विश्वव्यापी विषय की ओर बढ़े। हमने सांख्यिकी और तस्वीरों के माध्यम से एमडबल्यूसी के कार्यों को समझाया और यह भी कि यह किस तरह से संसार भर के कॉन्फ्रेंसों को सहभागिता, आराधना, गवाही और सेवा के लिए एक साथ जोड़ती है। जब हमने यह बताया, तो कान खड़े हो गए, आँखे चौड़ी हो गई।

ऐनाबैपटिस्ट/मेनोनाइट और ब्रदरन इन ख़ाइस्ट मसीहियों के लिए भारत और नेपाल में आयोजित कार्यशालाओं में से एक में एक गायन दल अपनी प्रस्तुति देते हुए। फोटो: केरोल ज़ूक

सुनने वाले यह सुन कर आनन्दित हुए कि वे परमेश्वर के बहुत बड़े परिवार का हिस्सा हैं। प्रत्येक मुलाकात के बाद, स्थानीय कॉन्फ्रेंसों ने यह जानना चाहा कि हम अगली बार उनसे कब मिलेंगे। अनेक छोटी और बड़ी कलीसियाओं ने संसार भर के मसीहियों के साथ बड़ी सहभागिता के बारे में जानने और उसका अनुभव करने की इच्छा प्रगट की। अनेक कलीसियाओं ने एक समय के भोजन की लागत के बराबर की राशि भेंट स्वरूप देने की इच्छा प्रगट की जो वार्षिक विश्व सहभागिता रविवार के अवसर पर एकत्रित की जाएगी। संसार भर के लोगों की आवश्यकताओं के बारे में जान कर निर्धन से निर्धन कलीसियाएं भी अपनी ओर से अधिक से अधिक योगदान देना चाहती हैं।

भारत और नेपाल में, हमारी कलीसियाओं को यह जानने की अत्यंत आवश्यकता है कि शान्ति और मेल की कलीसिया बनने का अर्थ क्या होता है। एमडबल्यूसी ने ऐसी समझ प्रदान करने के लिए संसाधन और प्रशिक्षण का प्रबन्ध किया। अक्टूबर और नवम्बर 2014 में, एमडबल्यूसी ने एमसीएसएफआई और मेनोनाइट सेन्ट्रल कमेटी के साथ मिल कर हमारे सारे कॉन्फ्रेंसों के लिए कार्यशालाओं का आयोजन किया जिनका उद्देश्य ऐनाबैपटिस्ट पहचान को दृढ़ करना था। लगभग 500 पासवान और अगुवों – महिलाएं व जवान भी शामिल थे – ने विश्वव्यापी अगुवों के द्वारा दी गई उत्तम शिक्षाओं का लाभ उठाया। (इन कार्यशालाओं के विषय में अधिक जानने के लिए फरवरी 2015 का *कोरियर न्यूज़* पढ़े।)

''शान्ति और न्याय'' की अत्यंत अनिवार्य समझ अब उन पृष्ठभूमियों में स्पष्ट होती जा रही है जहाँ हमारी कलीसियाएं स्थापित हैं – निर्धनता, अन्याय, और हिंसा की पृष्ठभूमि। स्थानीय कलीसियाओं के अगुवों ने यह संकल्प लिया है कि वे इन कार्यशालाओं के माध्यम से दी गई शिक्षाओं को आगे बढ़ाएंगे, और मसीही सत्य व ज्ञान को अपने कॉन्फ्रेंसों के ग्रामीण क्षेत्र के लोगों तक पहुँचाएंगे।

हमारे कॉन्फ्रेंसों की एक अन्य आवश्यकता है, संगति। इन कलीसियाओं की ''अल्पसंख्यक होने की भावना'' कभी कभी आत्मिक उन्नति में बाधक बनती हैं। तौभी इस प्रवृति के साथ जुड़ी भावनाएं लुप्त होती प्रतीत होती हैं जब कलीसिया के अगुवे और सदस्य विश्वव्यापी ऐनाबैपटिस्ट समुदाय को जान पाते हैं। यह जानने वाले विश्वासियों की संख्या बढ़ती जा रही है कि वे संसार भर के भाई बहनों के साथ एक यात्रा में आगे बढ़ रहे हैं – एक दूसरे को जानने की यात्रा, एक साथ मिलकर संघर्ष करने की यात्रा, और हताशा, अन्याय, और हिंसा के मध्य आशा लाने की यात्रा।

एमडबल्यूसी के कार्यों में निवेश करने पर मनों, रवैयों, और कार्यों में सकारात्मक परिवर्तन आए हैं। स्थानीय सेवकाई में शामिल सेवकों को यह आवश्यक है कि विश्वव्यापी सहभागिता की जिस नयी समझ को उन्होंने पाया है उसे बढ़ाने में जो भी आवश्यक हो वह करें। एमडबल्यूसी एक ऐसा स्थान निर्मित करती है जहाँ अलग अलग प्रकार के विश्वासी आ कर एक दूसरे से जुड़ सकते हैं, सीख सकते हैं, और अपने अनुभवों को बाँट सकते हैं। ऐसे सन्दर्भों में, हम इस बात की बेहतर समझ हासिल कर पाते हैं कि परमेश्वर किस तरह से सब परिस्थितियों में सब लोगों के मध्य में कार्य करता है – संसार में परमेश्वर के राज्य की सक्रियता की एक विस्तारित समझ।

सिंथिया पीकॉक एमडबल्यूसी की दक्षिण एशिया क्षेत्रीय प्रतिनिधि हैं। वे एमडब्यूसी डीकन कमीशन की अध्यक्षा भी हैं। 2006 में सेवानिवृत होने से पहले, उन्होंने मेनोनाइट सेन्ट्रल कमेटी के साथ 38 वर्षों तक समाज सेविका के रूप में सेवा की।

संयुक्त राज्य अमरीका

विविधता, गतिशीलता, और विरोधाभास

ओपन डोर मेनोनाइट चर्च, जैकसन, मिस्सिसिप्पी, यूएसए के सदस्य प्रेम से ऑलिगन कर एक दूसरे का अभिवादन करते हुए। यह मण्डली अमरीका में मेनोनाइट और ब्रदरन इन ख्राइस्ट में पाए जाने वाली लगातार बढ़ती नस्लीय और राष्ट्रीय विभिन्नता को परिलक्षित करती हैं। फोटो: विडा स्निडर द्वारा, साभार: मेनोनाइट चर्च, यूएसए

स्टीवन एम. नोल्ट

जब संसार भर के ऐनाबैपटिस्ट लोग इस ग्रीष्मकाल मेनोनाइट विश्व कॉन्फ्रेंस के सम्मेलन के लिए संयुक्त राज्य अमरीका आएंगे, तो वे इस स्थान के विषय में क्या अपेक्षा करते हुए आएंगे?

संयुक्त राज्य अमरीका एक विशाल और विविध राष्ट्र है, और इसलिए यहाँ बड़ी संख्या में मेनोनाइट, ब्रदरन इन ख्राइस्ट, आमिष, और ह्यूटेराइट्स पाए जाते हैं। मोटे तौर पर, संयुक्त राज्य अमरीका में 68 विभिन्न ऐनाबैपटिस्ट समूह अस्तित्व में हैं और इनकी 4,600 स्थानीय कलीसियाओं में 4,00,000 से अधिक सदस्य पाए जाते हैं। अमरीका के ऐनाबैपटिस्ट लोग अलग अलग प्रकार के समुदायों में रहते हैं, अलग अलग समुदाय के आरम्भ का अलग अलग इतिहास है और अलग अलग समुदाय विश्वास को अलग अलग तरीकों से व्यक्त करते हैं। उन में से कुछ एक दूसरे के बारे में बहुत कम जानते हैं। कुछ लोग एमडबल्यूसी में भाग लेंगे जबकि कुछ लोगों को यह कभी मालूम नहीं होगा कि एमडबल्यूसी का सम्मेलन हो रहा है। परन्तु अधिकांश लोग एमडब्यूसी के ''साझा विश्वास'' को स्वीकार करते हैं जिसमें उनके विश्वास की भी कुछ झलक शामिल हैं।

ऐनाबैपटिस्ट गवाही के लिए एक सन्दर्भ

संयुक्त राज्य अमरीका की स्थापना, 1776 में, प्रथम आधुनिक गणतंत्र के रूप में हुई थी। इसके संस्थापक यह मानते थे कि वे एक राजनैतिक प्रयोग का आरम्भ कर रहे हैं और उन्होंने मसीही समूहों को उनकी विविधिता के कारण अपने अपने विवेक के अनुसार चलने की उदारतापूर्वक स्वतंत्रता प्रदान की। 1865 तक, यह एक ऐसा राष्ट्र भी था, जहाँ प्रत्येक 100 में से 12 लोग अफ्रीकी मूल से आए गुलाम थे। अमरीका को रूप देने में पलायन के इतिहास की भी अहम भूमिका है इसलिए वर्तमान में संसार के सभी भागों के लोग अमरीका को घर कहते हैं। यह राष्ट्र एक अत्यंत जटिल अर्थव्यवस्था, प्रख्यात शोध विश्वविद्यालयों, नागरिक मामलों में स्वतंत्रता व अधिकारों की एक विशिष्ट परम्परा, और एक अत्याधिक विशाल व विश्व भर में सक्रिय सेना के लिए जाना जाता हैं। ये सारे घटक एक ऐसी परिस्थिति का निर्माण करते हैं जिसमें अमरीकी मसीही – जिसमें मेनोनाइट और अन्य ऐनाबैपटिस्ट शामिल हैं – रहते हैं।

अन्य देशों के समान, अमरीका भी राष्ट्रीय धारणाओं का एक देश हैं। उदाहरण के लिए, ''पिघलता हुआ बर्तन'' की धारणा; इसके अनुसार बहुत से अमरीकी यह मानते हैं कि अपनाना अनिवार्य है या सभ्यता है, या फिर दोनों है। यहाँ की शायद सबसे महत्वपूर्ण धारणा *''इनडिविजुअल ट्रान्सेन्डेंस''* हैं, एक आशा कि लोग सारी परम्पराओं को छोड़ कर एक नई शुरुआत करने में सक्षम हैं, भूतकाल से बेहतर भविष्य है, नया का अर्थ सुधार होता है। अमरीकियों की मानसिकता होती है कि वे असंतोष या अप्रसन्नता को दूर रखने के लिए किसी भी वस्तु, या समूह, या परिस्थिति को पीछे छोड़ कर पुन: एक नया आरम्भ करना अधिक पसन्द करते हैं, बजाए कि किसी पुरानी चीज़ से चिपके रह कर उसे सुधारने का प्रयत्न करना या उसके अनुसार ढल जाना। इस धारणा ने अमरीकी समाज को सक्रिय और उत्साही बना कर रखा है, और इसका असर यहाँ की कलीसियाओं में भी देखा जा सकता है। संयुक्त राज्य अमरीका ने धर्मविज्ञान क्षेत्र के आरपार बड़ी संख्या में बेजोड़ डिनोमिनेशनों और ''स्वतंत्र कलीसियाओं'' को जन्म दिया है।

दो प्रमुख समूह

अमरीका के ऐनाबैपटिस्ट लोगों के बारे में मोटे तौर पर समझ हासिल करने के लिए, उन्हें दो समूहों में बांटना उचित

होगा: ऐसे ऐनाबैपटिस्ट जो मुख्यधारा की अर्थव्यवस्था और शिक्षाप्रणालियों के साथ पूरी तरह से जुड़े हुए हैं, और ऐसे ऐनाबैपटिस्ट जिनकी दैनिक गतिविधियाँ सीधे सीधे उन्हें उनके पड़ोसियों से अलग दिखाती हैं। पहले समूह में अधिकांशत: मेनोनाइट चर्च, यूएसए, द यूएस कॉन्फ्रेंस ऑफ मेनोनाइट ब्रदरन, अमरीका की द ब्रदरन इन ख़ाइस्ट (बीआईसी), कंज़रव्हेटिव्ह मेनोनाइट कॉन्फ्रेंस और अन्य शामिल हैं। (उपरोक्त सभी मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस की सदस्य कलीसियाएं हैं।) जबकि ये भाई और बहन सामान्य रूप से, अपने विश्वास का जीवन ऐसे तरीकों से व्यतीत करने का यत्न करते है जो उनकी स्थानीय परिस्थितियों में परिवर्तन उत्पन्न करें, ये परिस्थितियाँ अक्सर अत्यंत पेशेवर, मध्यवर्गीय, और शहरी या उपशहरीय होती हैं। ये मेनोनाइट और बीआईसी लोग समाचार जानने व जानकारियाँ प्राप्त करने के लिए पारम्परिक समाचार माध्यमों का उपयोग करते हैं, उनके पास निजी गाड़ियाँ हैं, और वे मानते हैं कि उनके बच्चों के आर्थिक भविष्य के लिए स्कूली शिक्षा में अच्छा प्रदर्शन करना सबसे प्रमुख बात हैं और वे यह भी मानते हैं कि स्वास्थ्य के सम्बन्ध में उन्हें उनके बापदादाओं की तुलना में अच्छी देखभाल मिलनी चाहिए।

इसके विपरीत, पुराने आमिश – अमरीका का सबसे बड़ा ऐनाबैपटिस्ट समुदाय जिसकी सदस्य संख्या लगभग 12000 की है – और पुराने क्रम के मेनोनाइट्स व सम्बन्धित समूहों का एक वर्ग समान्यत: इन धारणाओं और मूल्यों से साझा नहीं रखता। सुबह उठ कर तैयार होने का तरीका, उनके कार्य का तरीका, अपने बच्चों के भविष्य के प्रति उनके विचार,

''ब्रश–आर्बर टेबरनेकल,'' जिसका निर्माण 1919 में ब्रदरन इन ख़ाइस्ट के सुसमाचार प्रचारकों के लिए किया गया था। बीआईसी एक ऐसा अमरीकी ऐनाबैपटिस्ट समुदाय है जो आत्मिक जाग्रितियों के अनेक कार्यक्रमों के द्वारा वर्तमान रूप में आया है। फोटो: साभार ब्रदरन इन ख़ाइस्ट हिस्टोरिकल लाइब्रेरी एण्ड आर्कइव्स

इन सारी बातों में ये ऐनाबैपटिस्ट जानबूझ कर अच्छे जीवन के बारे में अधिकांश अमरीकी नागरिकों की सोच से अलग सोच रखते हैं। ये लोग यात्रा करने के लिए घोड़ों का उपयोग करते हैं, उच्च शिक्षा को स्वीकार नहीं करते, और व्यवसायिक बीमा योजनाओं के भरोसे नहीं रहते।

अवश्य ही, इस व्यापक नमूने में कुछ अपवाद और भिन्नताएं भी हैं। दूसरे समूह के लोग उनके विषय में कहते हैं कि वे शान्तिवादियों के रूप में दूसरों से अलग हट कर सोच रखते हैं और उच्च नैतिक मूल्यों को अपनाने के लिए जाने जाते हैं। पुराने क्रम के कुछ मेनोनाइट अब राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था व मुख्यधारा से जुड़ने लगे हैं। तौभी, दूर से देखने वालों को दो प्रकार के लोगों के बीच में अन्तर दिखाई देता है, ऐसे लोग जिन्होंने अमरीकी समाज के बुनियादी रूप के अनुसार अपने को ढाल लिया है – या, नये प्रवासियों और समुदायों के लोग ऐसा करने के प्रयास में लगे हुए हैं – और ऐसे ''सीधे'' समूह जो अपने आप को ढालने या चीज़ों को अपनाने की प्रवृत्ति और अतीत को छोड़ कर आगे बढ़ जाने की राष्ट्रीय धारणाओं का सीधे तौर पर विरोध करते हैं।

मेनोनाइट सेन्ट्रल कमेटी (एमसीसी) के कर्मचारी मीकाइल शार्प पूर्वी डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगों में अपने कार्य के तहत एलिज़ाबेथ नामाउ और उनके बच्चों से मुलाकात करते हुए। अमरीका के बहुत से मेनोनाइट और बीआईसी लोगों ने विश्वव्यापी सम्पर्क कायम किया है, एमसीसी ऐसे सम्पर्क कायम करने वाले माध्यमों में से एक है। फोटो: जेना आसब्रेनेरोवा।

पलायन और जाग्रति की कहानियाँ

मेनोनाइट लोग 1600 की शताब्दी में पहली बार भावी संयुक्त राज्य अमरीका में बहुत कम संख्या में आए। 17वीं शताब्दी में और 18वीं शताब्दी के आरम्भ में पश्चिमी यूरोप से पलायन कर मेनोनाइट और आमिश बड़ी संख्या में आए, और 1870 के दशक में मेनोनाइट्स और हूटेराइट्स रूसी सम्राज्य से आए। धीरे धीरे – कुछ अवसरों पर बहुत ही धीरे – जर्मनी की इन कलीसियाओं ने अपने आप को अन्य पृष्टभूमियों के लोगों के लिए खोल दिया जिसमें अमरीका के मूल निवासी भी शामिल हैं जिनकी भूमि पर मेनोनाइट बसाहट निर्भर रही। पलायन सम्बन्ध सख्त नियमों के कारण मध्य 19वी शताब्दी में बाहर से आने वालों का रास्ता बन्द हो गया, परन्तु 1970 से अमरीका में हर दशक लाखों लोग पलायन कर आते रहे हैं, जिसमें एशिया, अफ्रीका, और लैटिन अमरीका के मेनोनाइट भी शामिल हैं। कुछ ऐनाबैपटिस्ट प्रवासी अपने साथ अपने कलीसिया कॉन्फ्रेंस को भी ले कर आए। उदाहरण के लिए, अब द *सिनोड जेमात क्रिसटेन* इण्डोनिशेया की आठ कलीसियाएं अमरीका के पश्चिमी तट पर पाई जाती हैं;

संयुक्त राज्य अमरीका में ऐनाबैपटिस्ट

मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस की सदस्य कलीसियाओं पर एक झलक

ब्रदरन इन ख्राइस्ट (बीआईसी) यूएस.	
सदस्य	22,120
मण्डलियाँ	262
मुख्यालय	मेकनिक्सबर्ग, पेन्नसिलवेनिया
अध्यक्ष	एलन रॉबिनसन

कन्सर्वेटिव्ह मेनोनाइट कॉन्फ्रेंस	
सदस्य	11,616
मण्डलियाँ	107
मुख्यालय	रोज़डाले, आहियो
अध्यक्ष	बॉब योडर

मेनोनाइट चर्च यूएसए	
सदस्य	103,245
मण्डलियाँ	921
मुख्यालय	एल्खार्ट, इण्डियाना न्यूटन, कानसास हैरिसनबर्ग, वर्जिनिया
अध्यक्ष	जे. रिचमण्ड थॉमस

इव्हेंजलिकल मेनोनाइट मिशन कॉन्फ्रेंस	
सदस्य	4,387 (कनाडा)/425 (एएसए)
मण्डलियाँ	22 (कनाडा)/4 (यूएसए)
मुख्यालय	विन्नीपेग, मोनिटोबा
अध्यक्ष	जेक थिज़न

सिनोड जेमात क्रिस्टेन इण्डोनेशिया	
सदस्य	600
मण्डलियाँ	8

यूएस कॉन्फ्रेंस ऑफ मेनोनाइट ब्रदरन चर्चेज	
सदस्य	35,488
मण्डलियाँ	196
मुख्यालय	विचिता, कानसास बेकर्सफील्ड, कैलिफोर्निया
अध्यक्ष	स्टीव स्क्रोइडर

स्रोत: एमडबल्यूसी वर्ल्ड मैप
www.mwc-cmm.org/maps/world
जनवरी 2015

हान्डूरासबेस *एमोर विवेन्ते* की कलीसियाएं अमरीका के अनेक दक्षिण राज्यों में पाई जाती हैं। इसी तरह से, कनाडा में मुख्यालय वाली इव्हेंजलिकल मेनोनाइट मिशन चर्च (इएमएमसी) के मेक्सिकाई सदस्य पलायन कर अमरीका गए, तो उन्होंने यहाँ भी इएमएमसी कलीसियाएं आरम्भ की (अब इन्हें एक्टिव मिशन कॉन्फ्रेंस के नाम से जाना जाता है)।

अमरीका एक ऐसा स्थान भी रहा है जहाँ आत्मिक जाग्रति के कार्यक्रमों ने दर्जनों नई ऐनाबैपटिस्ट कलीसियाओं को जन्म दिया। ब्रदरन इन ख्राइस्ट का उदय 1780 के दशक में पेन्नसिलवेनिया में मेनोनाइट्स के बीच हुआ जो भक्ति और पवित्र किए जाने की वेसलियन समझ से सरगर्म थे। 18वीं शताब्दी के मध्य में, पुराने क्रम के मेनोनाइट कलीसियाओं के जाग्रिति कार्यक्रमों ने दीनता और संतोष के व्यवहार पर जोर दिया, साथ ही विश्वास के सामूहिक तरीके को भी अपनाया और इस धारणा पर बल दिया कि कलीसिया का अनुशासन व इसकी व्यवस्था परमेश्वर के साथ किसी के व्यक्तिगत सम्बन्ध को बाधित नहीं, बल्कि दृढ़ करते हैं। बीसवीं शताब्दी में, कंज़र्वेटिव्ह मेनोनाइट कॉन्फ्रेंस में जाग्रिति आई जब अमरीकन इव्हेंजलिकलवाद ने सीएमसी की आमिश विरासत को प्रभावित किया। पेन्टिकॉस्टलवाद भी अमरीकी ऐनाबैपटिस्ट संसार के कुछ समूहों के लिए आत्मिक सामर्थ का एक स्रोत रहा है।

विकास के विरोधाभास

वर्तमान में अमरीका का ऐनाबैपटिस्ट संसार अधिक शहरी होता जा रहा है, शहरी ऐनाबैपटिस्ट लोगों में राष्ट्रीय और नस्लीय विविधता बढ़ती जा रही हैं, साथ ही साथ यह तेजी से ग्रामीण और श्वेत भी होता जा रहा है। एक ओर, अनेक ऐनाबैपटिस्ट समूहों के विस्तार के रूप में *कासा डेल डियोस विविन्ते* पोम्पानो बीच, फ्लोरिडा में बीआईसी, या सेन्ट पॉल, मिन्नेसोटा में हमोन्ग मेनोनाइट चर्च जैसी कलीसियाएं है। वहीं देश भर में फैले आधे मेनोनाइट ब्रदरन कलीसियाओं में स्पष्ट रूप से लैटिनो, एशियन-अमरीकन, स्लाविक या अफ्रीकन अमरीकन स्वाभाव स्पष्ट देखा जा सकता है। हैम्पटन वर्जिनिया में कलवरी कम्युनिटी चर्च, जिसमें 2200 से अधिक सदस्य हैं और अधिकांश अफ्रीकन-अमरीकी हैं, मेनोनाइट चर्च, यूएसए की सबसे बड़ी मण्डली है।

साथ ही साथ, अमरीकी ऐनाबैपटिस्ट संसार में संख्या की दृष्टि से सबसे अधिक वृद्धि आमिश और पुराने क्रम के मेनोनाइट समूहों में हो रही है। सुसमाचारवादी मेनोनाइट्स (*इव्हेंजलिकली ओरियेन्टेड*) और बीआईसी अक्सर इन समूहों में हो रही वृद्धि को नकारते हैं क्योंकि यह वृद्धि प्रजनन पर ही आधारित हैं। तौभी, सांस्कृतिक रूप से पुरातनपंथी ऐनाबैपटिस्ट कलीसियाएं अपने युवाओं को आकर्षित करने और उन्हें अपने पास बनाए रखने के लिए काफी परिश्रम करती हैं। इन कलीसियाओं के आकार और इनकी वृद्धि – यद्यपि मुख्यधारा के मेनोनाइट और बीआईसी सदस्यों की दृष्टि में महत्व न ही रखती हो – का अर्थ है कि अमरीका की ऐनाबैपटिस्ट जनसंख्या, एक साथ देखने पर, 30 वर्षों पूर्व की तुलना में, अब थोड़ी सी अधिक श्वेत और ग्रामीण हैं।

गवाही की समकालीन वास्तविकताएं और इसका क्षेत्र

1. *अमरीकी मेनोनाइट एक बहुत विशाल देश का एक बहुत छोटा हिस्सा हैं.* संयुक्त राज्य अमरीका का स्थान विश्व में महाशक्ति के रूप में है और इसकी आर्थिक और सैन्य नीतियाँ विश्व भर के लोगों के जीवनों को प्रभावित करती हैं। अमरीका के ऐनाबैपटिस्ट इस महाशक्ति ''भावना'' का हिस्सा हैं। परन्तु वे सांस्कृतिक दृष्टि से अपनी ओर उतना ध्यान नहीं खींच पाते, उदाहरण के लिए, जितना कि ऐनाबैपटिस्ट कनाडा में। न ही वे उतना अधिक आर्थिक या राजनैतिक प्रभाव रखते हैं, उदाहरण के लिए, जितना कि ऐनाबैपटिस्ट पैरागुवे में। वर्तमान के विशाल साम्राज्य के मध्य नन्हा अल्पसंख्यक होने के कारण अक्सर मेनोनाइट लोग राज्य/सरकार के साथ अपने सम्बन्ध में असहजता महसूस करते हैं।

इन में से कुछ के लिए, जिसमें पुराने क्रम के मेनोनाइट लोग भी शामिल हैं, सबसे बड़ी चिन्ता का कारण राज्य/सरकार द्वारा पुराने को पीछे छोड़ कर नया को अपनाने की बाध्यकारी नीति हैं। वे न सिर्फ देशभक्ति का प्रदर्शन करने और सेना में शामिल होने का विरोध करते हैं, परन्तु साथ ही (अधिकांश मामलों में) सरकारी (सार्वजिनिक) शिक्षा और सरकारी स्वास्थ्य कार्यक्रमों से भी दूर रहते हैं। अन्य मेनोनाइट लोगों के लिए, अमरीका द्वारा विश्व स्तरीय मामलों में थोपी जाने वाली अपनी अतिविशाल भूमिका और लगातार विदेशों में सैन्य हस्तक्षेप किया जाना अत्याधिक असहजता का कारण बनता हैं, और इसी तरह से कुछ लोगों के लिए, सार्वजनिक विरोध आन्दोलन उनकी असहजता का कारण बनते हैं। चाहे जो भी हो, अमरीकी में ऐनाबैपटिस्ट समुदाय का छोटा आकार

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान, अनेक मेनोनाइट और बीआईसी सदस्यों ने शान्ति के सुसमाचार के प्रति अपने समर्पण के कारण सैन्य सेवा में भाग लेने से मना कर दिया, जिसके कारण उन्हें जेल में डाल दिया गया। इस तस्वीर में, अनेक मेनोनाइट लोग जेल में भजन गा रहे हैं। फोटो: मेनोनाइट चर्च यूएसए आर्कव्ईस से साभार।

सार्वजनिक मामलों में बचाव व शान्त रहने की मुद्रा में बने रहने का कारण बन गया है, बजाए कि सरकारी संस्थाओं के साथ साझेदारी कर संसार के प्रति ऐनाबैपटिस्ट दर्शन को आगे बढ़ाने के।

2. *अमरीकी ऐनाबैपटिस्ट भौतिक भरपूरी के मध्य रहते हैं.* भले ही अमरीकी नागरिक होने का तमगा पहन कर वे कितना भी सुखद अनुभव करते हों, सामान्य रूप से अनेक मेनोनाइट और बीआईसी सदस्य आर्थिक रूप से समृद्ध हैं। अधिकांश मेनोनाइट लोग धनाड्य हैं और अपनी इस खासियत को वे कलीसियाई कार्यों और जनकल्याण के कार्यों के लिए, मेनोनाइट लोगों को और अन्य लोगों को उदारता से देने के द्वारा व्यक्त करते हैं। निश्चय ही लोकोपकार सम्बन्धी अध्ययन मनोनाइट लोगों को अन्य अमरीकी मसीहियों की तुलना में अधिक उदार वर्ग में रखता है। वैश्विक स्तर पर दान करने के अलावा, अमरीकी राष्ट्रीय धारणाओं को अपना लेने वाले मेनोनाइट और बीआईसी सदस्य स्वयं पर, चर्च भवन निर्माण या नवीनीकरण पर काफी धन खर्च कर रहे हैं, वे एक ही परियोजना पर करोड़ों रूपये व्यय कर देते हैं।

3. *अमरीका की विश्वसनीय कानूनी और आर्थिक व्यवस्था ने ऐनाबैपटिस्ट लोगों को अवसर दिया कि वे यहाँ बड़ी संख्या में संस्थाओं की स्थापना कर सकें.* ऐनाबैपटिस्ट लोगों के द्वारा मिशन एजेन्सियाँ और रिट्रीट सेन्टर से लेकर निवेश फण्ड और वृद्धालय जैसी संस्थाएं संचालित की जा रही हैं। इन बड़ी, और पेशेवर कर्मचारियों से लैस संस्थाओं को मेनोनाइट प्रेस के माध्यम से काफी प्रचार मिलता है, परन्तु यह उन अनेक सेवाओं को छिपा न दे, जो स्वयंसेवकों और सीमित संसाधनों की सहायता से संचालित की जाती हैं – और जिन लोगों के बीच में ये सेवाएं की जाती हैं उनके जीवनों में एक बड़ा प्रभाव छोड़ती हैं। उदाहरण के लिए, सैकड़ों मेनोनाइट और बीआईसी मण्डलियाँ नर्सरी/प्रीस्कूल और

बालवाड़ी, और महिलाओं के द्वारा संचालित सेवाओं में लगी हुईं हैं जिसके द्वारा हर वर्ष हजारों परिवार लाभान्वित होते हैं, परन्तु उन की ओर किसी का ध्यान नहीं जाता जिस प्रकार मेनोनाइट कॉलेजों और विश्वविद्यालयों की ओर दिया जाता हैं।

4. *अमरीका के ऐनाबैपटिस्ट लोग विभिन्न धर्मों और विभिन्न विश्वासमतों वाले एक अनेकवादी समाज में रहते हैं और यही उनकी आराधना और गवाही को रूप देता है.* अनेक ऐनाबैपटिस्ट कलीसियाओं में प्रोटेस्टेंट और रोमन कैथोलिक संगीतकारों के द्वारा रचे गए भजनों और समकालीन गीतों को गाया जाता है। इसके साथ साथ, *कैरिसमैटिक विचारधारा* की शैली और आत्मिकता ने भी अनेक ऐनाबैपटिस्ट मण्डलियों की आराधना को अपना एक रस दिया है। हमारी अन्य

1950 के दशक के आरम्भ में, फर्स्ट मेनोनाइट चर्च इन ब्लूफटोन, ओहियो, यूएसए की बहने विश्व भर में मेनोनाइट सेन्ट्रल कमेटी के राहत कार्यक्रमों के तहत वितरण हेतु मिल सकीं। फोटो: साभार ब्लूफटोन यूनिवर्सिटी आर्काईव्हस

मण्डलियों ने *इक्यूमेनिकल रिवाइज़्ड कॉमन लेक्शनरी* (लिखित आराधना विधि) और चर्च इयर के कैलेण्डर (कलीसियाई आराधना व गतिविधियों के लिए वार्षिक योजना) को भी अपना लिया है ताकि अपनी आराधना व संगति के जीवन को एक व्यवस्थित क्रम दे सकें। कुछ मेनोनाइट और बीआईसी शान्ति–स्थापक कैथोलिक और इव्हेंजलिकल लोगों के साथ मिल कर मृत्यु दण्ड को समाप्त करने की मांग में या बिनब्याही माताओं को सहारा देने के कार्य में लगे हुए हैं। हमारे कुछ अन्य लोग दूसरे धर्म के लोगों के साथ मिलकर पर्यावरण सम्बन्धी चिन्ताओं को सम्बोधित करते हैं।

5. *अमरीका के ऐनाबैपटिस्ट अनेक तरीकों से संसार के साथ जुड़े हुए हैं.* कुछ कड़ियाँ मेनोनाइट सेन्ट्रल कमेटी, मेनोनाइट इकॉनोमिक डेव्हलपमेंट ऐसोसिएट्स या क्रिश्चन एड मिनिस्ट्रीज़ के कार्यों या व्यवसाय के माध्यम से जुड़ी हुई हैं। अन्य कड़ियाँ यात्रा, बच्चों को गोद लेना, विवाह, या अन्तरराष्ट्रीय छात्रों की मेजबानी करने के माध्यम से जुड़ी हुई हैं। कुछ मण्डलियों ने संसार के अन्य मेनोनाइट या बीआईसी मण्डलियों के साथ बहन–कलीसिया का सम्बन्ध स्थापित किया है। अमरीकी ऐनाबैपटिस्ट लोगों को विश्वास के विश्वव्यापी घराने से बहुत कुछ सीखने की आवश्यकता हैं। अगला सम्मेलन, पेन्नसिलवेनिया 2015, और भी नए रिश्तों को बनाने और बढ़ाने का अवसर उपलब्ध कराएगा।

ओवरफ्लो, लैटिनो से/मियामि, फ्लोरिडा के आसपास की ब्रदरन इन ख्राइस्ट मण्डलियों के वयस्कों का एक गायन दल, 2014 चर्च कॉन्फ्रेंस में आराधना में अगुवाई कर रहा है। संयुक्त राज्य अमरीका के बीआईसी लोगों में से एक तिहाई लोग स्पेनिश भाषा बोलते हैं। फोटो: विल टियोडोरी/ बीआईसी यूएस कम्यूनिकेशन्स

स्टीवन एम. नोल्ट गोशन कॉलेज (गोशन, इन्डियाना, यूएसए) में इतिहास के प्राध्यापक हैं, और (कनाडा के रॉयडन लोयवेन के साथ) *सीकिंग प्लेसेस ऑफ पीस – नॉर्थ अमेरीका* के सह–लेखक हैं, जो विश्वव्यापी मेनोनाइट इतिहास का पाँचवा व अन्तिम संस्करण हैं।

पेन्नसिलवेनिया 2015 सम्मेलन के लिए कुछ ही महीने शेष हैं। क्या आप वहाँ हमारे साथ होंगे? संसार भर के ऐनाबैपटिस्ट भाईबहनों के साथ 21–26 जुलाई 2015 तक फार्म शो कॉम्पलेक्स, हैरिसबर्ग, पेन्नसिलवेनिया, यूएसए में मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस के विश्व सम्मेलन में शामिल होंवे। एमडबल्यूसी विश्व सम्मेलन हर छह वर्ष में एक बार आयोजित किया जाता है, और हर बार यह अलग महाद्वीप की मेजबानी में सम्पन्न किया जाता है। उत्तर अमरीका में 25 वर्षों के बाद पहली बार यह सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। सम्मेलन की एक झलक इन चित्रों में देखी जा सकती है। अधिक जानकारी के लिए, एमडबल्यूसी की वेबसाइट देखें।

आराधना और संगीत

क्या आप संगीत का आनन्द लेते हैं? यदि हाँ, तो अवश्य ही आप आराधना के द्वारा स्वयं को आत्मिक उर्जा से भरपूर अनुभव कर सकेंगे, जिसकी अगुवाई एक अर्न्तराष्ट्रीय क्वायर द्वारा और संसार भर से आए गायन दलों के द्वारा की जाएगी। और यदि हमारी आराधना के दौरान प्रस्तुत किए गए संगीतों से आपका मन न भरा हो, तो ग्लोबल चर्च विलेज़ की ओर बढ़ जाएं, जहाँ प्रत्येक दोपहर, वरदान प्राप्त संगीतकार, गायक, और कलाकार गीतों, नृत्यों, कहानियों, इत्यादि प्रस्तुत करेंगे।

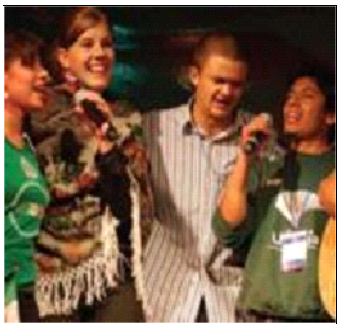

युवा वयस्क

हम ऐसा मानते हैं कि युवा न सिर्फ कलीसिया का भविष्य हैं – वे वर्तमान में ही कलीसिया हैं! अत: हमारा ग्लोबल यूथ समिट (18+ के लिए) हमारे युवा अगुवों के लिए संगति करने, अपने वरदानों का उपयोग करने, और नए रिश्ते कायम करने का एक स्थान होगा। जीवायएस 17–19 जुलाई तक मसायाह कॉलेज में आयोजित किया गया है।

वक्ता और मूल विषय

संसार भर के भाई बहनों के साथ मिलकर ''परमेश्वर के साथ साथ चलने'' का अर्थ क्या होता है? कांगों के नजूजी मुकावा केन्या, मेक्सिको, कनाडा, इण्डोनेशिया, भारत, नीदरलैण्ड, जिब्बाबवे, कोलम्बिया, संयुक्त राज्य अमरीका से आने वाले हमारे एक दर्जन से भी अधिक वक्ताओं में से एक होंगे जो सम्मेलन के मूल विषय, ''परमेश्वर के साथ साथ चलें'' पर प्रकाश डालेंगे। यद्यपि मंच पर से अंग्रेजी भाषा में संचालन किया जाएगा, परन्तु मंच से संगीत और आपसी वार्तालाप अनेक भाषाओं व बोलियाँ, सुनने के लिए भी तैयार रहें।

मित्रता समूह और कार्यशालाएं

यीशु के अनुयायियों की विश्वव्यापी देह में सहभागिता करने का एक लाभ यह होता है कि – सुबह के समय मित्रतासमूहों के माध्यम से – अन्य लोगों से विभिन्न संस्कृतियों, अनुभवों, और विश्वास की अभिव्यक्तियों को सीखने का अवसर मिलता है। दोपहर की कार्यशालाओं में अनेक भाषाओं में सेवकाई में लिंगभेद, ऐनाबैपटिस्ट इतिहास, अहिंसक संवाद, और राजनीति में विश्वास जैसे मुद्दों पर चर्चा की जाएगी, और इन कार्यशालाओं के माध्यम से आप नयी बातें सीख पाएंगे, नए मित्र बना पाएंगे, और यीशु को नई आँखों से देख पाएंगे।

फोटो (उपर से दाहिने ओर) रे डिर्क्स, रे डिर्क्स, लॉवेल ब्राऊन, विलहेम अंगर, मार्ले गुड द्वारा।

पंजीयन कराएं
एमडबल्यूसी की वेबसाइट देखें

Pennsylvania 2015

Mennonite World Conference
A Community of Anabaptist related Churches

Congreso Mundial Menonita
Una Comunidad de Iglesias Anabautistas

Conférence Mennonite Mondiale
Une Communauté d'Eglises Anabaptistes

बच्चे और युवा

पेन्नसिलवेनिया 2015 सिर्फ वयस्कों के लिए ही नहीं है; पूरे परिवार को साथ लाएं! बच्चे (4–11 वर्ष) और युवा (12–17 वर्ष) न सिर्फ वयस्कों के साथ आराधना में संयुक्त रूप से शामिल होंगे बल्कि प्रत्येक आयुवर्ग के अनुरुप तैयार कार्यक्रमों में भी हिस्सा लेंगे। साथ ही, अधिक आनन्द उठाने के लिए, युवा वर्ग मसायाह कॉलेज में ठहर सकता है और देर रात के खेलकूद व अन्य गतिविधियों में भाग ले सकता है।

खेलकूद, भ्रमण, सेवा

पेन्नसिलवेनिया 2015 में, हम न सिर्फ एक साथ मिलकर आराधना करेंगे – हम एक साथ मिलकर खेलेंगे भी! एमडबल्यूसी के प्रथम ऐनाबैपटिस्ट वर्ल्ड कप में संसार भर के अन्य फुटबॉल खिलाड़ियों और खेल प्रेमियों के साथ मिल कर टीमभावना और आनन्द की एक विश्वव्यापी अभिव्यक्ति का हिस्सा बनें। और यदि आपको फुटबाल में रूचि नहीं है, तो दोपहर की गतिविधियों में अन्य खेलों, सेवा परियोजनाओं, भ्रमण, और सीखने के अवसरों का आनन्द उठा सकते हैं।

फोटो (ऊपर बाएं से दाएं) लॉवेल ब्राऊन, लॉवेल ब्राऊन, विलहेम अंगर, मर्ले गुड द्वारा)

पंजीयन कराएं
एमडबल्यूसी की वेबसाइट देखें

पंजीयन

क्या आप जानते हैं कि अब तक 70 से भी अधिक देश के लोग पेन्नसिलवेनिया 2015 के लिए पंजीकरण करवा चुके हैं। आइये और सप्ताह भर विश्वव्यापी कलीसिया का अनुभव लीजिए . . . और पंजीकरण में सहयोग देने जैसी रचनात्मक सम्भावनाओं पर भी विचार कीजिए! पंजीकरण के अन्य विकल्पों के लिए एमडबल्यूसी की वेबसाइट देखें। वेबसाइट पर खर्च, आवास व्यवस्था, आवागमन के विकल्प, और यात्रा या वीसा सम्बन्धी व्यवस्थाओं पर जानकारियाँ भी उपलब्ध है।

शीघ्र पंजीयन करवाएं

यदि आपको संयुक्त राज्य अमरीका में प्रवेश करने के लिए वीसा अनिवार्य है, तो यह आवश्यक है कि आप शीघ्रातिशीघ्र पंजीयन करवाएं। शीघ्र पंजीयन करवाना सिर्फ अर्न्तराष्ट्रीय प्रतिभागियों के लिए ही नहीं, बल्कि सब के लिए बेहतर हैं क्योंकि **21 जून से पंजीयन की राशि बढ़ जाएगी।**

मै क्या कर सकता हूँ?

- हमारे प्रार्थना नेटवर्क के साथ मिलकर स्टाफ, वॉलेन्टियर्स, और उन सब के लिए प्रार्थना करें जो अमरीकी वीसा पाने के लिए प्रयत्नशील हैं।
- उत्तर अमरीका व संसार के अन्य भागों के ऐसे प्रतिभागियों के लिए आर्थिक सहयोग देने में सहभागी हों जो आर्थिक रूप से कमजोर हैं।
- सम्मेलन के पाहुनों के लिए निजी घरों में बिस्तरों की आवश्यकता है। यदि आप सेन्ट्रल पेन्नसिलवेनिया में रहते हैं, तो कृपया एमडब्लयूसी की वेबसाइट में सहमति दे कर अपने घरों को पाहुनों के लिए खोलें।

असेम्बली स्केटर्ड

उत्तर अमरीका की कलीसिया आपका स्वागत करती है कि आप यहाँ आ कर देखें कि परमेश्वर उनके माध्यम से क्या कर रहा है! सम्मेलन के लिए आते समय या घर वापस जाते समय, आप को अवसर होगा कि टेक्सास, अलास्का, या न्यूयार्क सिटी जैसे रोचक स्थानों की यात्रा कर यह देखें कि परमेश्वर कलीसियाओं, और आप के समान साधारण लोगों के माध्यम से किस तरह कार्य कर रहा है।

इन विषयों पर अधिक जानकारी के लिए एमडब्लयूसी की वेबसाइट देखें।

क्या आपके मन में कोई प्रश्न हैं? हमसे सम्पर्क करें!

Mennonite World Conference
PO Box 5364
Lancaster, PA 17606-5364
Pennsylvania2015@mwc-cmm.org
1-717-826-0909

Pennsylvania
2015

News Courier Noticias Correo Nouvelles Courrier

April 2015
Volume 30, Number 2

Mennonite World Conference
A Community of Anabaptist related Churches
Congreso Mundial Menonita
Una Comunidad de Iglesias Anabautistas
Conférence Mennonite Mondiale
Une Communauté d'Eglises Anabaptistes

समाचार संक्षेप

जापान के मेनोनाइट लोगों के द्वारा सरकार के युद्ध–समर्थक प्रस्ताव का विरोध

होक्काइडो, जापान/एल्खार्ट, इण्डियाना, यूएसए – जापान की सीमा से बाहर युद्ध छेड़ने के विरुद्ध जापान द्वारा स्वयं पर लगाए प्रतिबन्ध में संशोधन प्रस्ताव पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए जापान के मेनोनाइट लोगों ने जापान की युद्ध–विरोधी नीति को दृढ़ करते हुए इसके पक्ष में एक व्यक्तव्य जारी किया है।

सितम्बर 2014 को जारी विरोध व्यक्तव्य जापान के कैबिनेट द्वारा जुलाई में लिए गए उस निर्णय पर प्रतिक्रिया थी जिसमें कैबिनेट ने 1947 में युद्ध पश्चात बनाए गए देश के शान्ति सम्बन्धी संविधान की व्याख्या फिर से करने की पहल की है, यह संविधान जापान द्वारा अपने बचाव में किए जाने वाले बलप्रयोग को सीमित रखता है। प्रस्तावित संशोधन के अनुसार पूर्व एशिआई देश अपनी सीमाओं के बाहर भी अपने मित्र राष्ट्रों के प्रति ''निकट सम्बन्धों को दर्शाते हुए'' उनकी सहायता करने के लिए आक्रमक कदम उठा सकेंगे।

पीस मिशन सेन्टर ऑफ द *निहोन मेनोनाइटो किरसुतो क्याकाय क्योंगिकाय* (जापान मेनोनाइट क्रिश्चन चर्च कॉन्फ्रेंस), द कॉन्फ्रेंस ऑफ मेनोनाइट चर्चेज़ ऑफ होक्काइडो, जापान ने सरकार द्वारा लाए जा रहे इस बदलाव का विरोध किया है। जापान के प्रधानमंत्री शिंजो के प्रशासन को सम्बोधित करते हुए, इस व्यक्तव्य में शान्ति के विषय में मसीही धारणा पर जोर दिया गया है और सरकार से यह आग्रह किया गया है कि वह अपने इस निर्णय पर पुनर्विचार करे। सरकार ने इस व्यक्तव्य पर अब तक कोई प्रतिक्रिया नहीं दी है।

इससे पहले, मई 2013 में, जापान के चौदह मेनोनाइट और ब्रदरन अगुवों ने संविधान में बदलाव के इसी प्रस्ताव का विरोध किया था।

मसीही जगत में और इसके बाहर भी होक्कायडो के मेनोनाइट लोग अपने इन विचारों को दूसरों तक पहुँचा रहे हैं और उन्हें भी इन विचारों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं। यूकारी कागा, जो ओबिहारी मेनोनाइट चर्च और पीस मिशन सेन्टर बोर्ड के सदस्य हैं, ने कहा है कि ''यीशु की शान्ति हमारे विश्वास का आधार है।''

युद्ध–विरोधी विवाद के परिणामस्वरूप, युवा भी अपने पक्ष को दृढ़ करते हुए और अभिव्यक्ति और विचारों के आदानप्रदान की स्वतंत्रता के प्रति जागरूक हो कर अपनी आवाज उठाने लगे हैं। ''स्कूल से प्रकाशित होने वाले समाचार पत्रों में, वे

पृष्ठ ii में जारी

मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस विश्व सम्मेलन पेन्नसिवेनिया 2015 के बारे में अधिक जानकारी के लिए!

एमडबल्यूसी का अगला सम्मेलन 21–26 जुलाई 2015 तक हेरिसबर्ग, पेन्नसिलवेनिया, यूएसए में आयोजित किया जा रहा है!

इस आयोजन के बारे में अधिक जानकारी के लिए और सम्मेलन की तैयारियों की नवीनतम जानकारियों के लिए, एमडबल्यूसी की वेबसाइट देखें।

Pennsylvania 2015

पेन्नसिलवेनिया 2015 सम्मेलन की नवीनतम खबरें

सम्मेलन कार्यक्रम का केन्द्र –सकारात्मक तनाव

हेरिसबर्ग, पेन्नसिलवेनिया, यूएसए – मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस द्वारा ''प्रतिदिन हमारे सामने आने वाले अनेक महत्वपूर्ण विषयों में पाए जाने वाले सकारात्मक तनावों'' को पेन्नसिलवनिया 2015 में होने वाले अगले सम्मेलन को प्रमुखता से सामने रखा जाएगा।

लिसा अंगर, एमडबल्यूसी के लिए अन्तर्राष्ट्रीय आयोजन समन्वयक ने यह बताते हुए आगे कहा, ''मसीहियों के रूप में, हम ऐसा समझते हैं कि हमें इन संघर्षों पर प्रबल होना या इनसे निपटना चाहिए,'' (इसकी बजाए, सम्मेलन के लिए) हमने दो दो वक्ताओं से निवेदन किया है कि वे प्रत्येक सुबह इस विषय पर प्रकाश डालें कि हम इन तनावों में ही किस तरह से विश्वासयोग्यता के साथ जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

''परमेश्वर के साथ साथ चलें'' 21–26 जुलाई 2015 तक होने वाले पेन्नसिलवेनिया 2015 सम्मेलन में मार्गदर्शन के लिए हमारा मूल विषय होगा।

वक्तागण सुबह की आराधना के दौरान निम्नलिखित विषयों पर प्रकाश डालेंगे:

. ''सन्देह में और दृढ़ निश्चय के साथ कैसे चलें,'' बुधवार, जुलाई 22

. ''विवाद में और मेलमिलाप में कैसे चलें,'' गुरुवार, जुलाई 23

. ''अकेले स्वतंत्र रूप से और समुदाय के रूप में कैसे चले,'' शुक्रवार, जुलाई 24

. ''प्राप्त करते हुए और देते हुए कैसे चलें,'' शनिवार, जुलाई 25।

सुबह की आराधना में वक्ताओं के रूप में हमें रबेका ओसिरो (केन्या में पासवान), टॉम योडर न्यूफेल्ड (कनाडा में प्राध्यापक), नैन्सी हेयसे (अमरीका में प्राध्यापक), शान्त कुंजाम (भारत में मेनोनाइट बिशप) और हिप्पोलिटो त्शिमंगा (कनाडा में मिशन निदेशक) की ओर से स्वीकृति मिल चुकी है।

''हमने संसार भर से युवा वयस्क वक्ताओं को भी पेन्नसिलवेनिया

पृष्ठ ii में जारी

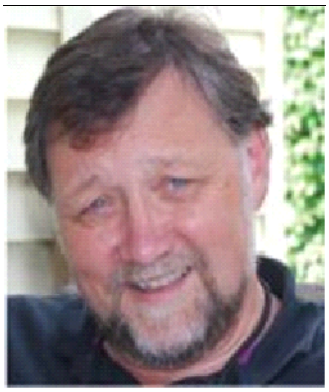

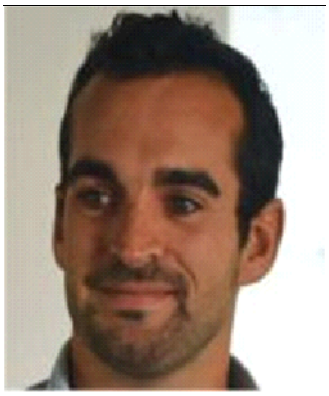

पेन्नसिलवेनिया 2015 में सुबह के वक्ताओं में से केन्या की एक पासवान रबेका ओसिरो (ऊपर), कनाडा के एक प्राध्यापक टॉम योडर न्यूफेल्ड (बीच में)। इन वक्ताओं के प्रस्तुति–करण पर प्रतिक्रिया देने वाले युवा वयस्कों में स्पेन/आस्ट्रेलिया के मार्क पास्कस (नीचे) भी शामिल हैं।

पृष्ठ i से आगे

उन बातों के विषय में लिखते हैं जो उन्हें अलग या अटपटी लगती है, और उनकी टिप्पणियों को सभी छात्र पढ़ते हैं,'' यह बात यासुको मोमोनो ने कहा, वे एक हाईस्कूल शिक्षक हैं और समाचार पत्र केसलाहकार हैं, वे फिरेनो नोज़ोमी मेनोनाइट चर्च के सदस्य और एक पीस मिशन सेन्टर बोर्ड के सदस्य भी हैं।

जापानी सरकार द्वारा अपनाई गई पिछली नीति द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद लिए गए निर्णय से उत्पन्न हुई थी, जिसके अनुसार वे आगे से कभी युद्ध की पहल नहीं करेंगे और सिर्फ देश के आन्तरिक मामलों में और छोटे मामलों में सैन्य अभियानों का समर्थन करेंगे। कुछ जापानी राजनेता और नागरिक उत्तरपूर्व के पड़ोसी देशों के आक्रमक रवैये के भय से यह चाहते हैं कि आत्म रक्षा सम्बन्धी प्रतिबन्धों को हटाया जाए।

– मेनोनाइट मिशन नेटवर्क द्वारा विल लाविस्ट के माध्यम से जारी की गई समाचार विज्ञप्ति से लिया गया।

इवान क्नाप्पेनबर्गर, नए पाठ्यक्रम के एक लेखक जिसमें यह प्रयास किया गया है कि कलीसिया और सेवानिवृत्त सैनिकों के बीच की खाई को पाटने का प्रयास किया गया है। फोटो: साभार मेनोनाइट सेन्ट्रल कमेटी, यूएसए।

अमरीकी सेवानिवृत्त सैनिकों और शान्ति की पक्षधर कलीसियाओं के बीच सम्बन्ध कायम करने का प्रयास

एक्रोन, पेन्नसिलिवेनिया, यूएसए – अनेक उत्तरी अमरीकी एजेन्सियों ने साथ मिलकर एक नया सण्डे स्कूल पाठ्यक्रम तैयार किया है जो शान्ति की पक्षधर कलीसियाओं और सेवानिवृत सैनिकों के बीच की खाई को पाटने में सहायक है।

''सेवानिवृत्त सैनिकों की वापसी, आशा की वापसी: साथ मिलकर शान्ति की खोज'' का आरम्भ मेनोनाइट सेन्ट्रल कमेटी, द पीस एण्ड जस्टिस सर्पोट नेटवर्क ऑफ मेनोनाइट चर्च यूएसएस (एमसीयूएसए) और मेनोनाइट मिशन नेटवर्क (एमएनएन) के द्वारा किया गया था। एमसीयूएसए मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस की सदस्य कलीसिया है, जबकि एमसीसी और एमएनएन का सम्बन्ध एमडबल्यूसी के साथ इसके मिशन कमीशन के माध्यम से जुड़ा है – एमसीसी इसके कमीशन के ग्लोबल ऐनाबैपटिस्ट सर्विस नेटवर्क और एमएनएन इसके ग्लोबल मिशन फैलोशिप के माध्यम से।

इस पाठ्यक्रम का विमोचन 2014 के अन्त में अमरीका में सेवानिवृत्त सैनिकों के सम्मान में दिए जाने वाले एक राष्ट्रीय अवकाश के अवसर पर किया गया। छह सप्ताहों के लिए तैयार किया गया यह पाठ्यक्रम सदमा के सम्बन्ध में बाइबल आधारित मनन और समझ पर जोर देता है।

क्नाप्पेनबर्गर, इराक युद्ध के एक सेवानिवृत्त सैनिक ने इस्टर्न मेनोनाइट यूनिवर्सिटी (हैरिसोनबर्ग, वर्जिनिया, यूएसए) में अध्ययन करते हुए, 2014 का कुछ समय एक गैरपारम्परिक पाठ्यक्रम के तहत शोध और लेखन में व्यतीत किया।

वे कहते हैं, ''मैंने मेनोनाइट जगत के सेवानिवृत्त सैनिकों के बीच काफी काम किया है। हर मेनोनाइट समुदाय में, यदि अधिक नहीं तो, कम से कम एक या दो ऐसे लोग पाए ही जाते हैं। ब्रदरन इन ख्राइस्ट चर्च इन पेन्नसिलवेनिया में काफी संख्या में ऐसे लोग पाए जाते हैं।''

इस पाठ्यक्रम को तैयार करने वाले लोग इसे उत्तर–अमरीकी मेनोनाइट लोगों के लिए सीखने का एक नया क्षेत्र मानते हैं – किस प्रकार से शान्तिवादी मसीही लौटने वाले योद्धाओं को अपना सकते हैं।

क्नाप्पेनबर्गर कहते हैं, ''सेवानिवृत्त सैनिकों और वर्तमान सैनिकों में बहुत सी ऐसी योग्यताएं होती हैं कि वे कलीसिया को योगदान दे सकें। इन में अच्छे गुण पाए जाते हैं। गाँधी एक ऐसे ही व्यक्ति थे; टॉलस्टॉय भी इसी वर्ग के थे। जो लोग हमें अहिंसा की शिक्षा देते हैं, उनमें से अनेक लोग एक समय इस वर्दी को पहिनते थे।''

– *मेनोनाइट वर्ल्ड रिव्यू* में टिम ह्यूबर जारी जारी एक समाचार विज्ञप्ति से लिया गया

स्मृति: एडवर्ड साहनी

धमतरी, भारत – एडवर्ड साहनी, पिछले छह वर्षों से मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस जनरल कॉन्सिल के एक प्रतिनिधि, 13 दिसम्बर 2014 को 65 वर्ष की आयु में हमारे बीच में से चले गए। वे मेनोनाइट चर्च इन इण्डिया, धमतरी का प्रतिनिधित्व करते थे। वे सुन्दरगंज मेनोनाइट चर्च के सदस्य थे।

वे पेशे से एक डॉक्टर थे, उन्होंने धमतरी मसीही अस्पताल, धमतरी और जगदीशपुर में अपनी सेवाएं दीं। उन्होंने शान्तिपुर लेप्रसी अस्पताल (लेप्रसी मिशन) शान्तिपुर और लेप्रसी अस्पताल, चाँम्पा में भी सेवाएं दी। चिकित्सकीय कार्य के साथ साथ, वे शिक्षा के क्षेत्र में एक सक्रिय अगुवे

पृष्ठ iv में जारी

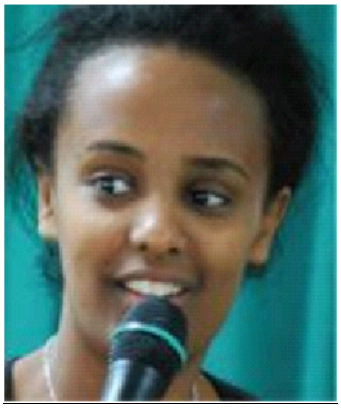

युवा वयस्क वक्ता जो पेन्नसिलवेनिया 2015 में सुबह के सन्देश पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करेंगे, इनमें मैक्सिको के रोड्रिगो पेड्रोज़ा (बाएं), और इथोपिया के तिजिस्त तेसफाय गेलाग्ले (दाएं) शामिल हैं।

पृष्ठ i से आगे

2015 के हमारे मंच के दल के पूर्ण सदस्यों के रूप में आमंत्रित किया है,'' लिसा अंगर आगे कहती हैं, ''एक युवा वयस्क प्रत्येक सुबह के प्रस्तुतिकरण पर अपनी प्रतिक्रिया देगा।'' इसके लिए हमें तिजिस्त तेसफाय गेलाग्ले (इथोपिया), रेमिलिन मेन्डेज़ (फिलिप्पिन्स), रोडरिगो पेडोज़ा (मेक्सिको) और मार्क पास्कस (स्पेन/आस्ट्रेलिया) की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है।

''सकारात्मक तनाव'' पर ध्यान केन्द्रित करने की योजना के विषय में अंगर आगे कहती हैं, ''परमेश्वर ने हमें अनुभवों, संस्कृतियों, और पृष्ठभूमियों की क्या ही प्रचुर विविधता प्रदान की है – और हम एक दूसरे के अलग अलग प्रकार के जीवनों से सीखना चाहते हैं, जब हम जुलाई में एक साथ होंगे। अक्सर हम अपने बीच में परमेश्वर के राज्य के एक छोटे से हिस्से को ही देख पाते हैं। हम में से प्रत्येक, अपनी अपनी पृष्ठभूमियों में ऐसी दुविधाओं का सामना करता है जो हमें भयभीत कर देती हैं। तो फिर हम क्यों न एक साथ मिल कर और एक दूसरे का सहयोग करते हुए बाइबल का गहराई से अध्ययन करें और एक साथ एक बड़ी एकीकृत विश्वासयोग्यता के प्रति समर्पित हों?''

एमडबल्यूसी के जनरल सेक्रेटरी, कोलम्बिया के सीज़रगार्सिया ने ''परमेश्वर के साथ साथ चलें'' विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा: ''मैं मसीही जीवन को जीवन जीने के एक ऐसे तरीके के रूप में समझना पसन्द करता हूँ जो अभी निर्माणाधीन है, यह एक ऐसी प्रक्रिया हैं जो ठहरी हुई या समाप्त नहीं हुई है। वास्तव में मेरा यह विश्वास है कि पेन्नसिलेवेनिया 2015 में होने वाली हमारी चर्चाएं हमें बदल कर रख देंगी क्योंकि यहाँ हम एक साथ मिल कर यह जानने का प्रयत्न करेंगे कि अपने अपने समुदायों में मसीह के पीछे चलने के अर्थ क्या हैं।''

इन प्रस्तुतिकरणों और प्रतिक्रियाओं के साथ साथ सुबह के सत्रों में अन्तर्राष्ट्रीय मित्रता समूह भी आयोजित किए जाएंगे जिनमें प्रतिदिन विभिन्न विषयों पर चर्चा की जाएगी। लिसा अंगर के अनुसार, ये मित्रता समूह ''संगति करने का एक अनुभव होंगे, साथ ही साथ यह एक अवसर होगा कि हम एक अत्यंत अपनेपन के वातावरण में ऐसे विषयों पर अदान–प्रदान करें जो हमारे लिए सबसे बड़े बोझ हैं। हम नहीं चाहते कि कोई भी ऐसा कह पाए कि हमने किसी भी व्यक्ति से बात नहीं किया, सिवाय उनके जिन्हें हम पहले से जानते थे।''

अन्तिम बात, हर सुबह एक अन्तर्राष्ट्रीय गायन दल आरम्भिक स्तुतिगान में अगुवाई करेगा।

लिसा अंगर ने यह भी बताया है कि हर संध्या ''गवाहियों, प्रार्थना, वरदानों के बाँटने, और प्रोत्साहन करने का समय होगा।'' संध्या के समय आराधना के कार्यक्रमों को अन्तिम रूप दिया जा रहा है।

पेन्नसिलवेनिया 2015 के कार्यक्रमों में बच्चों (7–11 आयु वर्ग) और युवाओं (12–17 आयु वर्ग) के लिए भी कार्यक्रम तैयार किए गए हैं।

इन कार्यक्रमों के विषय में अधिक जानकारी के लिए – सुबह के सत्रों से लेकर संध्या की आराधना, और बच्चों और युवाओं की गतिविधियाँ – एमडबल्यूसी की वेबसाइट देखें: mwc-cmm.org।

– फिलिस पेलमान गुड

पेन्नसिलवेनिया 2015 के विषय में सामग्रियाँ एमडबल्यूसी की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं

बगोटा, कोलम्बिया – अब जबकि अगले विश्व सम्मेलन, पेन्नसिलवेनिया 2015 को लेकर उत्सुकता बढ़ती जा रही है, मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस ने मण्डलियों के लिए विभिन्न प्रकार की सहायक सामग्रियाँ तैयार की हैं जिनकी सहायता से पेन्नसिलवेनिया 2015 का प्रचार किया जा सकेगा। यह सब एमडबल्यूसी की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं।

कलीसिया के अगुवे माइक्रोसॉफ्ट वर्ड डॉक्यूमेंट डाऊनलोड कर सकेंगे जिसे चर्च बुलेटिन के माध्यम से सूचना देने के लिए सीधे सीधे उपयोग किया जा सकेगा। (इस समय यह सिर्फ अंग्रेजी में

पृष्ठ iii में जारी

''आप ऐनाबैपटिस्ट क्यों हैं?''

एमडबल्यूसी समुदाय के सदस्य कारण बता रहे हैं कि उन्होंने एक ऐनाबैपटिस्ट पहचान को क्यों अपनाया।

रेनर बुरकार्ट
सदस्य, एमडबल्यूसी एक्ज़ीक्युटिव्ह कमेटी, जर्मनी

''मैं इसलिए एक ऐनाबैपटिस्ट हूँ क्योंकि मैं वयस्कों को ही बपतिस्मा दिए जाने, सब विश्वासियों के याजकपद और कलीसिया के सब सदस्यों के द्वारा लिये जाने वाले निर्णय की धारणाओं को मानता हूँ।''

सान्द्रा बाएज़
जनरल सेक्रटरी की सहायक, कोलम्बिया

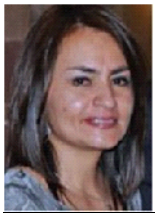

''मैं इसलिए एक ऐनाबैपटिस्ट हूँ क्योंकि यह प्रवाह के विरुद्ध जाने वाला एक रोमांच हैं।''

एडगार्डो सांचेज़
सदस्य, एमडबल्यूसी कार्यकारिणी समिति, अर्जेंटीना

''मैं इसलिए एक ऐनाबैपटिस्ट हूँ क्योंकि मुझे क्षमा मिली और परमेश्वर ने मुझे यीशु मसीह का प्रचार करने के लिए बुलाया।''

रोन पेन्नर
सदस्य, एमडबल्यूसी कार्यकारिणी समिति, कनाडा

''मैं इसलिए एक ऐनाबैपटिस्ट हूँ क्योंकि यह यीशु की शिक्षाओं और आदर्शों के पीछे चलने का एक प्रयास है। साथ ही यह मुझे मसीह की विश्वव्यापी ऐनाबैपटिस्ट देह के साथ जोड़ता है।''

डानिसा न्डलोवू
एमडबल्यूसी अध्यक्ष, जिम्बाब्वे

''मैं इसलिए एक ऐनाबैपटिस्ट हूँ क्योंकि मेरे विश्वास और मेरे चरित्र का आधार पवित्रशास्त्र है और इसलिए भी कि इस जीवन में मेरी आत्मिक यात्रा का आदर्श मसीह है।''

मरकुस रेडिजर
सदस्य, एमडबल्यूसी कार्यकारिणी समिति, स्वीट्ज़रलैण्ड

''मुझे खुशी है कि मैं ऐनाबैपटिस्ट विश्वव्यापी घराने का एक सदस्य हूँ जहाँ हम अपने विश्वास/धारणाओं से प्रेम रखते हैं और शान्ति का प्रचार करते और इसे बढ़ावा देते हैं। विश्वव्यापी मसीही कलीसिया के सामने हमारी गवाही उतनी ही प्रासंगिक हैं जितनी यह 500 वर्ष पूर्व थी।''

आप एमडबल्यूसी को निम्नलिखित योगदान दे सकते हैं!

आपकी प्रार्थनाएं और आर्थिक भेंट सराहनीय हैं। आपके योगदान हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इनके द्वारा:

- विश्वास के विश्वव्यापी घराने के पोषण व प्रोत्साहन के लिए संवाद की विस्तृत योजनाओं को रूप दिया जा सकता है।
- ऐनाबैपटिस्ट मसीहियों के रूप में अनेकता के सन्दर्भ में हमारी सहभागिता की गवाही और पहचान को दृढ़ किया जा सकता है।
- नेटवर्क और सम्मेलनों के माध्यम से समुदाय का विकास किया जा सकता है ताकि हम एक दूसरे से सीख सकें और एक दूसरे की सहायता कर सकें।

www.mwc-cmm.org में जा कर प्रार्थनों निवेदनों के लिए "Get Involved" और विभिन्न तरीकों से ऑनलाइन भेंट भेजने के लिए "Donate" क्लिक करें। या अपनी भेंटे मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस को निम्नलिखित में से किसी एक पते पर भेंजे:

. PO Box 5364, Lancaster, PA 17606 USA
. 50 Kent Avenue, Kitchener, ON N2G 3R1 Canada
. Calle 28A No. 16-41 Piso 2, Bogota, Colombia
. 8 rue du Fosse des Treize, 67000 Strasbourg, France

पृष्ठ ii में जारी

उपलब्ध हैं।) कब कब किन किन जानकारियों की सूचना देना है, इसके लिए तिथियों का भी उल्लेख किया गया है और प्रति सप्ताह एमडबल्यूसी का उल्लेख करने के लिए सरल तरीका तैयार किया गया है।

यदि आवश्यकता हो, तो पेन्नसिलवेनिया 2015 का एक रंगबिरंगा पोस्टर भी तैयार है जिसमें असेम्बली गेदर्ड, असेम्बली स्केटर्ड, और ग्लोबल यूथ समिट की तारीखें दी गईं हैं। यह पीडीएफ फाइल में उपलब्ध है, जिसे आसानी से डाऊनलोड कर प्रिंट किया जा सकता है।

कलीसिया में एमडब्लयूसी का परिचय देने के लिए साढ़े तीन मिनट का एक विडियो भी है, जिसका शीर्षक हैं, ''हू इज़ मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस?'' इस विडियो में यह बताया गया है कि विश्वास का विश्वव्यापी घराना होने का अर्थ क्या होता है, यह विडियो अंग्रेजी, स्पेनिश, और फ्रेंच में उपलब्ध है।

एमडबल्यूसी द्वारा सम्मेलन-पूर्व सभाओं के लिए साझेदारी

बगोटा, कोलम्बिया – मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस विभिन्न एजेन्सियों के साथ मिलकर अगले सम्मेलन, पेन्नसिलवेनिया 2015 से पहले, अनेक सभाओं का आयोजन करने वाली है, जो ग्लोबल चर्च से सम्बन्धित विभिन्न विषयों पर केन्द्रित होगी। सम्मेलन का आयोजन 21–26 जुलाई 2015 से होगा।

इन प्रत्येक सभाओं के आयोजनकर्ताओं ने एक एक उप मूलविषय चुना है जो सम्मेलन के मूल विषय, ''परमेश्वर के साथ साथ चलें'' से सम्बन्धित है। इन सभाओं के तहत होने वाली गतिविधियाँ इस प्रकार से हैं:

. एमडबल्यूसी के स्वास्थ देखभाल अगुवों का शिखर सम्मेलन: स्वास्थ देखभाल की राह पर एक साथ

पेन्नसिलवेनिया 2015 के लिए नया पोस्टर, सम्मेलन के प्रचार के लिए उपयोगी, अब एमडबल्यूसी के वेबसाइट पर उपलब्ध है।

जो लोग पेन्नसिलवेनिया 2015 सम्मेलन को अपनी प्रार्थनाओं के माध्यम से सहयोग देना चाहते हैं उनके लिए भी सहायक सामग्रियाँ उपलब्ध हैं। विश्वव्यापी ऐनाबैपटिस्ट परिवार के भाई बहनों को पेन्नसिलवेनिया 2015 प्रार्थना नेटवर्क में शामिल होने के लिए हम आमंत्रित करते हैं। ऑनलाइन जानकारियाँ उपलब्ध है और आप साइनअप कर पेन्नसिलवेनिया 2015 से सम्बन्धित बाइबल आधारित मनन, कहानियाँ, और जानकारियाँ मासिक रूप से प्राप्त कर सकते हैं, और इस विषय के लिए प्रार्थना कर सकते हैं।

ये सारी सहायक सामग्रियाँ एमडबल्यूसी के वेबसाइट mwc-cmm.org/pa2015resources के असेम्बली खण्ड के ''रिर्सोसेज़'' पेज पर सरलता से उपलब्ध है।

– क्रिस्टीना टोइव्स

. एमडबल्यूसी विश्वव्यापी शिक्षा कॉन्फ्रेंस: शिक्षा में ऐनाबैपटिस्ट आत्मिकता की राह पर एक साथ।

. एमडबल्यूसी और मेडा विश्वास और व्यवसाय पर चर्चा: विश्वास और व्यवसाय की राह पर एक साथ

. एमडब्यूसी और ऐतिहासिक शान्ति कलीसियाएं: शालोम के राह पर एक साथ

विस्तृत जानकारी के लिए एमडब्लयूसी बेवसाइट mwc-cmm.org/pa2015 देखें। ''अबाउट पीए 2015'' मीनू में ''अदर मीटिंग्स'' देखें।

प्रार्थना के विषय

. मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस अपनी सदस्य कलीसियाओं से निवेदन करती है कि *एक्क्लेसियार यानुवा ए नाइजीरिया* (इवायएन, द चर्च ऑफ ब्रदरन इन नाइजिरिया) के लिए प्रार्थना करें, जो बोको हराम संगठन की ओर से भयानक हिंसा और सताव का सामना कर रही हैं।

हाल ही में जारी एक समाचार विज्ञप्ति में, इवायएन के अध्यक्ष सैमुएल डालि ने, सचेत किया है कि उत्तरी नाइजिरिया में मसीहियों के ''जातिसंहार'' की आशंका है। उनकी सूचना के अनुसार आठ पासवानों और 3,038 इवायएन सदस्यों को मार डाला गया है, 80 सदस्यों का अपहरण कर दिया गया है और 96,000 लोगों को बेघर कर दिया गया है। वे यह भी बताते हैं, ''इवायएन को आतंकवादियों की ओर से अनेक तरीकों से गम्भीर क्षति पहुँचाई गई हैं। लार्डिन गाबास, जो इवायएन का ऐतिहासिक केन्द्र हैं, लगभग पूरी तरह से नष्ट कर दिया गया है। इसलिए, प्रार्थना करते रहें ताकि प्रभु हमारे विश्वास को बढ़ाए और इन कष्टों को सहने की शक्ति प्रदान करे . . . जिन लोगों को उन्होंने मार डाला है उनकी अब तक गिनती नहीं हुई और उन्हें दफन भी नहीं किया जा सका है।''

एमडबल्यूसी अपने सदस्यों को उत्साहित करती है कि वे अपने नाइजीरियाई भाई बहनों के द्वारा सहे जा रहे दुखों के बारे में जाने। हम अपनी सदस्य कलीसियाओं को भी उत्साहित करते हैं कि इवायएन के साथ किए जाने वाले पत्राचार और सम्पर्क की एक प्रति एमडब्यूसी को भेजें, ताकि एमडब्यूसी को सभी सम्भव पहलों की जानकारी रहे। अधिक जानकारी के लिए, एमडबल्यूसी की वेबसाइट mwc-cmm.org देखें।

अक्सर इस प्रकार की स्थितियों में, अकेलपन की भावना और दूसरों से सहायता न मिल पाना सबसे अधिक निराशाजनक होता है। आइये हम साथ मिलकर इस बोझ को उठाएं। इन भाइयों और बहनों को उनके लिए अपनी प्रार्थनाओं और सहायता का भरोसा दिलाएं।

. भारत की एक मण्डली के अगुवों और सदस्यों के लिए प्रार्थना करें जो इस समय दलितों के बीच में अपनी सेवकाई के कारण सताव का सामना कर रही है। दक्षिण तमिल क्षेत्र के कोंगालनगरम ग्राम की मण्डली गिलगाल मिशन ट्रस्ट की एक अंग है, जो मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस का सदस्य है। एक रविवार, उच्चवर्गीय कट्टरपंथी हिन्दुओं का एक स्थानीय समूह आराधना भवन में घुस आया, उन्होंने विश्वासियों पर आक्रमण कर दिया तथा पासवान को आराधना सभा रोक देने को कहा।

प्राप्त जानकारी के अनुसार, इस आक्रमण का कारण यह है, कि इन उच्चवर्गीय हिन्दु जातियों को इस बात से परेशानी है कि मसीही प्रभाव इन दलितों को उनके मानवीय और नैतिक अधिकारों से अवगत करा देता है। उच्च वर्ग को इस बात से आपत्ति है कि यदि दलित लोग पढ़ लिख कर अन्य नौकरियाँ प्राप्त कर लेंगे तो इन उच्च वर्गों को मजदूरों की कमी हो जाएगी।

स्थानीय समुदाय के अगुवों ने स्थिति पर विचार करने के लिए एक शान्ति समिति का गठन किया है। गिलगाल मिशन ट्रस्ट के अध्यक्ष पॉल फिनियास ने हमें लिखा है, ''हम इस मुद्दे को शान्ति के साथ हल करना चाहते हैं, कृपया प्रार्थना करें कि उच्च जाति के समुदाय (गोंडर और नायडू शान्तिवार्ता में) समझौता के लिए आगे आए और अपना मन बदलें।''

नाइजीरिया में बेघर कर दिया गया एक परिवार, साथ में नाइजीरियाई ब्रदरन की एक सदस्या रबेका डालि एक विस्थापन शिविर में उत्तरपूर्व नाइजीरिया में हो रही हिंसा के कारण भाग कर वहाँ शरण लिए लोगों से मुलाकात करती हुई। फोटो: साभार रबेका डालि, चर्च ऑफ ब्रदरन की वेबसाइट से।

नदिरान्डे ब्रदरन इन ख्राइस्ट चर्च भवन, जनवरी 2015 में भारी वर्षा के कारण क्षतिग्रस्त हो गया। रेव्ह. फ्रॉन्सिस कामोटो के द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार भवन की वेदी खराब होने से बच गई, यद्यपि भवन के अन्य भाग नष्ट हो गए।

. मेनोनाइट चर्च नाइजीरिया में 10–13 अगस्त 2015 तक एकेत, अकोवा इबोम राज्य में आयोजित किए जा रहे राष्ट्रीय युवा शिविर के आयोजकों के लिए प्रार्थना करें। सामिस्ट एकपेडेमे जैकसन, राष्ट्रीय युवा संगति के अध्यक्ष और शिविर के संयोजक, के अनुसार सभी युवा (15–40 वर्ष) चाहे वे किसी भी देश के हों इस में भाग लेने आमंत्रित हैं। इस शिविर में उद्धार पर केन्द्रित सन्देश, शान्ति स्थापना, प्रेरक चर्चाएं, कैरियर कॉन्सिलिंग, बाइबल अध्ययन, और छोटे और बड़े उद्योगों के लिए मानव पूंजी विकास जैसी कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

. भूटान के भाइयों और बहनों के लिए प्रार्थना करें, जहाँ सुसमाचार प्रचार के दरवाजे बन्द हैं और वे यीशु का प्रचार खुलेआम नहीं कर सकते, न ही कलीसिया भवन का निर्माण कर सकते हैं। भूटान का एकमात्र अधिकारिक धर्म बौद्ध धर्म है और यदि कोई विश्वासी सुसमाचार प्रचार करते हुए पकड़ा जाए तो उसे गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया जाता है। इन विश्वासियों की भौतिक आवश्यकताओं के लिए भी प्रार्थना करें और यह प्रार्थना भी करें कि परमेश्वर इस स्थान में लोगों को यीशु के पीछे चलने के लिए बुलाहट दे।

. मालावी के लोगों के लिए प्रार्थना करें, जो जनवरी 2015 में लगातार हुई भारी बारिश के कारण बाढ़ और बेघर होने की समस्या का सामना कर रहे हैं। ब्रदरन इन ख्राइस्ट चर्च इन मालावी के रेव्ह. फ्रान्सिस कामोटो के अनुसार अनेक घर बाढ़ में बह गए, और अनेक ढह गए। क्षतिग्रस्त भवनों में नदिरान्डे ब्रदरन इन ख्राइस्ट चर्च भवन (चित्र में) भी शामिल है।

समाचार संक्षेप

पृष्ठ ii से आगे

के रूप में जाने जाते थे। वे लगभग 10 वर्षों तक मेनोनाइट मिशन बोर्ड और मेनोनाइट बोर्ड ऑफ क्रिश्चन एजुकेशन के सभापति रहे। वे मेनोनाइट इंग्लिश सीनियर सेकेण्डरी स्कूल धमतरी और मेनोनाइट हायर सेकेण्डरी स्कूल धमतरी के मैनेजर भी रहे। वे अपने पीछे अपनी पत्नी अंजना और गोद ली हुई एक बेटी छोड़ गए।

एडवर्ड साहनी

Courier/Correo/Courier (ISSN 1041-4436) is published six times a year. Twice a year, the newsletter is inserted into 16-page magazine. Mennonite World Conference, Calle 28A No. 16-41 Piso2, Bogota.
Publication Office: Courier, 451B Pleasant Valley Road, Harrisonburg VA 22801 USA, Periodical postage paid at Harrisonburg VA, Printed in USA.
POSTMASTER: Send Address Changes to Courier, 451B Pleasant Valley Road, Harrisonburg VA 22801 USA.

Courier Correo Courier

Volume 30, Number 2

सीज़र गार्सिया प्रकाशक
रोन रेम्पल प्रमुख सम्प्रेषण अधिकारी
डेविन मानज़ुल्लो सम्पादक

Courier News निवेदन पर उपलब्ध है।
सभी पत्र इस पते पर भेजें:
MWC, Calle 28A No. 16-41 Piso 2, Bogota,
Colombia

Email: info@mwc-cmm.org
www.mwc-cmm.org

MWC Publications Request

I would like to receive:

MWC *Info*
A monthly email alert with links to articles on MWC website.

Courier
Published bimonthly (every other month): twice (April and October) as a 16-page magazine and four times (February, June, August, December) as a four-Page Magazine

☐ English
☐ Spanish
☐ French

☐ Electronic Version (pdf)
☐ Print Version

☐ Check here if you are currently receiving the print version of *Courier/Correo/Courrier* and want to receive the electronic version instead. If you want to receive both the electronic and print versions, check both boxes above.

Name_____
_____
Address_____
_____
_____
_____
Email_____
Phone_____

Complete this form and send to:
Mennonite World Conference
50 Kent Avenue, Suite 206
Kitchener, Ontario N2G 3R1 Canada

हमें एक विश्वव्यापी सहभागिता की आवश्यकता क्यों है?

''परमेश्वर के साथ साथ चलें'' हमारे अगले विश्व सम्मेलन का मूल विषय है, जो 21–26 जुलाई 2015 तक आयोजित किया जाना है। परन्तु यदि हमारा विश्वास हूबहू एक नहीं है तो हम साथ साथ कैसे चल सकते हैं? कुछ महिनों पूर्व एक समुदाय में मुलाकात के समय एक अगुवे ने मुझ से यह प्रश्न किया था। वे ऐसा मानते हैं कि जिन लोगों के विचार हमसे अलग हैं हम उनके साथ नहीं चल सकते।

संसार भर में लोगों की यही धारणा है, विशेष कर जब हम धार्मिक अन्तरों के सन्दर्भ में बात करते हैं। यहाँ तक कि हमारे ऐनाबैपटिस्ट इतिहास में विघटन और विभाजनों को एक लम्बा लेखा जोखा है जो इस कारण उत्पन्न हुए क्योंकि सिद्धान्तों और मूल्यों के सम्बन्ध में हमारे बीच में सख्त मतभेद हैं। क्या यह सम्भव है – या चाहनेयोग्य है – कि संस्कृतियों, मूल्यपरक निर्णयों, और धर्मवैज्ञानिक समझ में अन्तरों के बाद भी हम विश्वव्यापी रूप से सहभागिता करें?

मेरा मानना है कि एमडबल्यूसी में हमने यह अनुभव किया है कि अन्तर के बाद भी साथ आना न सिर्फ सम्भव है बल्कि लाभदायक भी है। ऐसी विविधता प्रगट रूप से सामने आती हैं जब हम एक ही नींव, जो डाली गई है, को साझा करते हैं: यीशु मसीह।

इसके अतिरिक्त, जब मैं पवित्रशास्त्र को देखता हूँ, तो मुझे कम से कम तीन कारण दिखाई देते हैं कि हमें एक विश्वव्यापी, बहुसांस्कृतिक और अत्यंत विविध समुदाय की आवश्यकता क्यों है।

पहला कारण, यीशु मसीह। बाइबल में सुसमाचार की चार पुस्तकें पाई जाती हैं जो हमें यीशु मसीह के बारे में बताती हैं। इनमें से प्रत्येक पुस्तक यीशु के साथ लेखक के अनुभव को परिलक्षित करती है। इन पुस्तकों में यीशु का चित्रण एक ही प्रकार से नहीं किया गया है। इन पुस्तकों के बीच ढेर सारी भिन्नताएं हैं। हमारे पास सिर्फ एक ही सुसमाचार क्यों नहीं है? हमें चार अलग अलग दृष्टिकोणों की आवश्यकता क्यों है जो अलग अलग समझ प्रदान करते हैं? अपने आरम्भ से ही, कलीसिया ने इस विभिन्नता को यीशु को पहचाने के लिए अनिवार्य और सहायक जाना। आरम्भिक कलीसिया ने चारों सुसमाचार के बीच में समरूपता लाने का प्रयास नहीं किया कि हमें यीशु के बारे में एक ही जैसा और एक समान वर्णन मिले। हमें यीशु की पहचान बेहतर रूप से हासिल करने के लिए विविधता की आवश्यकता है।

दूसरा कारण, नीति। 1 कुरिन्थियों 13 में प्रेम के विषय में दिया गया पाठ भिन्नताओं और गहरे मतभेदों की पृष्ठभूमि में लिखा गया है। उदाहरण के लिए, उस सन्दर्भ के विश्वासियों के बीच इस बात को लेकर मतभेद थे कि वे क्या खा सकते हैं और क्या नहीं खा सकते। विश्वासी इस नीतिगत समस्या को लेकर अलग अलग निर्णय लेते थे, क्योंकि इस सम्बन्ध में पवित्रशास्त्र में भी सीधा सीधा उत्तर नहीं दिया गया है। इस सन्दर्भ में, पौलुस प्रेरित प्रेम करने का आग्रह कर रहा है। इस उदाहरण से, ऐसा प्रतीत होता है कि विविधता और यहाँ तक कि मतभेद भी मसीह की देह में अनिवार्य हैं यदि हम एकता, प्रेम, क्षमा, धीरज, और दीनता के अर्थ को समझना चाहते हैं। हमारे समान सोच रखने वालों से प्रेम करना सरल होता है, परन्तु क्या हम उन लोगों से भी प्रेम रख सकते हैं जो हमसे अलग विचार रखते हैं?

तीसरा, दृष्टि। इम्माऊस के मार्ग पर, चेले सत्य को तभी पा सके जब उन्होंने यीशु को अपना केन्द्र बना कर अपने मतभेदों के बाद भी साथ बैठकर भोजन किया। उन्होंने यरूशलेम से निकल कर चलते चलते, मसीह के बारे में अपनी अलग अलग समझ के कारण एक दूसरे से अलग हो कर चलने की अपनी प्रवृति का प्रतिरोध किया। उन्होंने घण्टों धर्मविज्ञान पर तर्क वितर्क कर यीशु को नहीं पाया। उनकी आँखे सिर्फ उस समय खुली जब उन्होंने एक साथ मिलकर भोजन किया। हम मसीह के अन्य अनुयायियों के दृष्टिकोण को स्वीकार कर एक नई दृष्टि पाते हैं – और मसीह से भी – जब हम लोगों को अपने विरोधी पक्ष के रूप में नहीं बल्कि हमारे परिवार के सदस्य के रूप में देखते हैं। परिवार के साथ, अपने मतभेदों के बाद भी साथ मिलकर बैठना और भोजन करना सम्भव है।

हमें एक विश्वव्यापी समुदाय की आवश्यकता क्यों है? यह प्रश्न उन अनेक विषयों में से एक है जिसे हमने कोरियर के इस अंक में सम्बोधित किया है। हमें एक विश्वव्यापी समुदाय और इसके द्वारा लाई जाने वाले विविधता की आवश्यकता है ताकि हम यीशु को बेहतर रीति से जान सकें; एकता, क्षमा, प्रेम, धीरज, और दीनता के अपने अनुभवों में आगे बढ़ सकें; और उन वास्तविकताओं के प्रति अपनी आँखों को खोल सकें जो हमें एक दूसरे से निकट रखती हैं ।

परमेश्वर हमारी सहायता करे कि हम साथ साथ चलें और अपनी अत्यंत विविध विश्वव्यापी कलीसिया से प्रेम रखें। इस विचार के एक भाग का अनुभव करने के लिए मैं पेन्नसिलवेनिया 2015 की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। आइये, हमारे साथ शामिल हों, और हम मिल कर परमेश्वर के साथ साथ चलें!

सीज़र गार्सिया, एमडबल्यूसी जनरल सेक्रेटरी, बगोटा, कोलम्बिया के मुख्यालय में सेवारत्।